ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित...

वर्ष - 27 | अक्टूबर -2025 | अंक - 10 | माउंट आबू | Rs.-16

संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भारत व नेपाल में हुआ कार्यक्रम

रक्तदान मानवता का सबसे बड़ा महान कार्य- जेपी नड्डा

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज संस्था मानवता के लिए महान कार्य कर रही है। रक्तदान अभियान मानवता का सबसे बड़ा महान कार्य है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज के ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर में समाज सेवा प्रभाग द्वारा विशाल राष्ट्रीय रक्तदान अभियान के शुभारम्भ पश्चात् दादी प्रकाशमणि सभागार में आयोजित कार्यक्रम में माननीय केन्द्रीय मंत्री जेपी नड्डा, स्वास्थ्य,परिवार कल्याण, रसायन तथा उर्वरक मंत्रालय,भारत सरकार ने व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था ने आन्तरिक परिवर्तन के कार्य को एक वटवृक्ष के समान विशाल रूप दिया है। वे दादीजी की समाज सेवा एवं प्रखर नेतृत्व की याद दिलाता है। संस्थान द्वारा विश्वभर में व्यक्तिगत रूप से हो रहे आंतरिक परिवर्तन से ही सामाजिक परिवर्तन संभव है। ब्रह्माकुमारीज संस्था मूल्य परक शिक्षा पर विशेष जोर देती है। मूल्य आधारित शिक्षा ही मानव मन को सुख और शान्ति से भर सकती है। मन की शान्ति ही चित्त को शान्त करती है, जिससे ही सामाजिक सामंजस्य पैदा होता है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा जीवनदान है। बुझती ज्योति को प्रज्वलित करना ही परम पुण्य है। उन्होंने आगे कहा कि ये अभियान दादी प्रकाशमणि जी के 18वें पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर हो रहा है। दादी प्रकाशमणि जी का जीवन हमारे लिए आदर्श है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि रक्तदान के लिए शुद्ध रक्त होना भी जरूरी है। जिसके लिए व्यसनों और बुराइयों से मुक्ति आवश्यक है। कार्यक्रम में अभियान के लिए एक गीत का भी शुभारम्भ हुआ। जिसको ब्र.कु. चांद ने स्वर प्रदान किए। ग्लोबल हॉस्पिटल,माउंट आबू के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने भी अपने विचार रखे। प्रेरक वक्ता ब्र.कु. इवी गिरीश ने अभियान के उद्देश्य को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि अभियान का लक्ष्य एक लाख यूनिट रक्तदान का है। ब्र.कु. बीरेन्द्र ने सभी को रक्तदान करने के लिए प्रतिज्ञा कराई। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. सरिता एवं ब्र.कु. विद्यार्थी ने किया। कार्यक्रम के दौरान लगभग 2000 लोगों की उपस्थिति रही।

भारत तथा नेपाल में ब्रह्माकुमारीज द्वारा रक्तदान अभियान के दौरान सभी प्रदेश वाइज एकत्र की गई यूनिट रिपोर्ट...

88581 यूनिट

S. No.	State Name	Total Units
01	Andhra Pradesh	4775
02	Arunachal Pradesh	18
03	Assam	478
04	Andaman and Nicobar Islands	76
05	Bihar	1232
06	Chandigarh	549
07	Chhattisgarh	3611
08	Dadra & Nagar Haveli	28
09	Daman & Diu	98
10	Delhi	3437
11	Gujarat	8756
12	Haryana	6636
13	Himachal Pradesh	902
14	Jharkhand	825
15	Jammu & Kashmir	84
16	Karnataka	5510
17	Kerala	885
18	Madhya Pradesh	4615
19	Maharashtra	12044
20	Nagaland	29
21	Odisha	1777
22	Punjab	1108
23	Rajasthan	7430
24	Sikkim	496
25	Tamil Nadu	734
26	Telangana	3012
27	Tripura	219
28	Uttar Pradesh	4296
29	Uttarakhand	542
30	West Bengal	1775
1	Nepal	15355
	Total	88581

परिस्थितियों में तनाव मुक्त रहने का सहज साधन राजयोग मेडिटेशन : उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी

जयपुर-वैनिशाल नगर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 18 वें स्मृति दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के 'पीस पैलेस' में आयोजित रक्तदान शिविर में आयीं राजस्थान की माननीया उप-मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने दादी को पुष्पांजलि अर्पित कर सच्ची श्रद्धांजलि देने के बाद उन्होंने अपने संबोधन में रक्तदान को महादान बताते हुए कहा कि रक्तदान से किसी ज़रूरतमंद को जीवनदान मिल सकता है। इस पुण्य आयोजन में उपस्थित होकर मुझे मानवता के इस महान कार्य में सहभागी बनने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने आगे कहा कि यहाँ पर सिखाया जाने वाला राजयोग मेडिटेशन वर्तमान समय की परिस्थितियों में तनाव मुक्त रहने का सहज साधन है। जिसे सभी को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाना चाहिए। रक्तदान शिविर में राजस्थान का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल एस.एम.एस. ब्लड बैंक एवं संतोकबा दुर्लभ जी ब्लड बैंक द्वारा ब्रह्माकुमारीज पीस पैलेस सेवाकेन्द्र पर 170 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। खेतान अस्पताल द्वारा निःशुल्क हृदय एवं स्वास्थ्य जांच व दृष्टि आई हॉस्पिटल द्वारा निःशुल्क नेत्र जांच की गई। कार्यक्रम में अन्य संस्थाएं, संगठन व आर्मी के लेफ्टिनेंट राहुल जोशी 30 रक्तदाताओं के साथ पहुंचे। सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. हेमलता ने कार्यक्रम को सफल बनाने वाले सभी सहयोगी संस्थाओं व रक्तदाताओं को भी धन्यवाद दिया। उद्योगपति मदनलाल शर्मा ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य अतिथिगण भी उपस्थित रहे।

रक्त की एक-एक बूंद जीवनदायिनी

वाराणसी-सारनाथ(उ.प्र.)। संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम सभी अतिथियों के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में आयुष मंत्री दयाशंकर मिश्र ने कहा कि रक्त की एक-एक बूंद अमृत तुल्य जीवनदायिनी है। संस्थान अपने व्यापक अभियान के तहत एक लाख से अधिक यूनिट संकलन कर नया कीर्तिमान रचने जा रही है, जो गौरव की बात है। मुझे बहुत खुशी है कि इस पवित्र और दिव्य स्थान में आकर मैं इस अभियान में शामिल हो पाया। राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि हर एक को आपस में मिलकर आगे बढ़ने की ज़रूरत पर बल दिया। शिविर आयोजन कमेटी के सचिव होली हॉस्पिटल पहाड़िया के प्रबंधक डॉ. के.पी. जायसवाल ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर की सार्थकता और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए सहयोगी कबीर चौरा हॉस्पिटल और टाटा कैंसर हॉस्पिटल के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रबंधक ब्र.कु. दीपेन्द्र, ब्र.कु. राधिका, ब्र.कु. तापोशी, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. शिवपूजन, पूर्व सी.एम.ओ. डॉ. वी.वी. सिंह, हरहुआ के ब्लॉक प्रमुख विनोद कुमार उपाध्याय, स्थानीय समाजसेवी अनुज पाण्डेय, कैंसर हॉस्पिटल के प्रो. रेवती नैयर, कबीर चौरा हॉस्पिटल के डॉ. संजीव कुमार सिंह, आयकर अधिकारी राकेश श्रीवास्तव, आर.एस.एस. कुटुम्ब प्रबोधन काशी उत्तर भाग के संयोजक रमेश सिंह आदि की उपस्थिति रही। संस्था की ओर से अतिथियों को सम्मान स्वरूप प्रमाण पत्र प्रदान किया।

दीपावली पर आंतरिक सफाई और नये साल की योजना

राजयोगी ब्र.कु. [illegible]

दीपावली का पर्व केवल घरों को रोशनी और सजावट से भरने का अवसर नहीं है बल्कि यह भीतर की धूल हटाकर आत्मा को उज्जवल करने की प्रेरणा भी देता है। परमात्मा द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के अनुसार असली सफाई केवल बाहर की दीवारों या वस्त्रों तक सीमित नहीं होती, बल्कि विचारों, संस्कारों और सम्बन्धों की धूल हटाना ही सच्चा शुद्धिकरण है।

जब हम दीपावली के अवसर पर झाड़ू-पोंछा करके घर को चमकाते हैं, तो यह हमें याद दिलाता है कि मन की गहराई में जमी हुई नकारात्मकता, आलस्य, ईर्ष्या, नफरत, घृणा और क्रोध की परतों को भी हटाना ज़रूरी है। जिस प्रकार अन्धेरे कमरे में दीपक जलाते ही प्रकाश फैल जाता है, उसी प्रकार आत्मा रूपी दीपक में परमात्मा की स्मृति का तेल भरकर हम भीतर की अन्धकारमय प्रवृत्तियों को दूर कर सकते हैं। यह आन्तरिक दीपावली ही वास्तविक उत्सव है।

नये वर्ष का आरम्भ दीपावली के साथ ही होता है। यह हमें संकेत देता है कि केवल कैलेंडर बदलने से जीवन नहीं बदलता, बल्कि हमें संकल्प बदलने की आवश्यकता है। यदि हम नये वर्ष में शुद्ध विचारों, सकारात्मक दृष्टिकोण और श्रेष्ठ कर्म करने का संकल्प लें तो जीवन स्वतः ही नए रंगों से भर उठेगा।

परमात्मा हमें सिखाते हैं कि संकल्प ही सृष्टि का बीज है। जैसा बीज होगा वैसा ही वातावरण और परिणाम मिलेगा।

अक्सर लोग नए साल पर बड़े-बड़े लक्ष्य बनाते हैं, परंतु उसका आधार कमज़ोर होता है। सच्ची योजना यह है कि पहले आत्मा को शक्तिशाली बनाया जाए, नियमित राजयोग मेडिटेशन, सात्विक आहार और अच्छे संस्कारों का अभ्यास आत्मा को बल देता है। जब आत्मा मजबूत होती है तो निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है और लक्ष्य पाने की शक्ति भी सहज ही मिल जाती है।

इस दीपावली पर हम यह प्रण लें कि केवल बाहर के दीप जलाने तक ही सीमित न रहें, बल्कि अपने अंतर्मन में भी दिव्यता का दीप प्रज्वलित करें। क्रोध के स्थान पर शान्ति, ईर्ष्या के स्थान पर सहयोग, चिन्ता के स्थान पर ईश्वर पर विश्वास और घृणा-नफरत के स्थान पर आत्मिक स्नेह को स्थान दें, शक व अनुमान की दृष्टि को बदल स्पष्टता और स्वच्छता रखें, अंदर-बाहर सच्चाई व सफाई का व्यवहार रखें, सर्व के प्रति शुभभावना-शुभकामना देने का दृष्टिकोण बनाएं। यही आन्तरिक सफाई है।

नये वर्ष की योजना केवल आर्थिक और व्यावसायिक लाभ तक ही न रहे, बल्कि आत्मिक उन्नति, स्वस्थ जीवनशैली और परिवार में मधुर संबंध स्थापित करने पर भी ध्यान केन्द्रित हो। जीवन का वास्तविक लाभ तभी है जब हम स्वयं भी शान्त और सुखी रहें तथा दूसरों को भी सुख और शान्ति का अनुभव कराएं।

अंततः दीपावली हमें यह याद दिलाने आती है कि अंधकार चाहे कितना भी गहरा हो, एक छोटा-सा दीपक उसे मिटाने के लिए पर्याप्त है। उसी प्रकार, नकारात्मकता चाहे कितनी भी हो, यदि आत्मा परमात्मा से जुड़कर एक संकल्प ले ले, तो नया साल वाकई नया बन सकता है। यही परमात्मा का संदेश है कि आत्मिक दीपावली मनाओ और नये युग की ओर कदम बढ़ाओ।

मनमनाभव के मंत्र को यंत्र बना दो तो सफलता मिल जाएगी

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा कहते हैं बच्चे अभी समय बहुत नाजुक आने वाला है इसलिए अपने मन पर कन्ट्रोल ज़रूर होना चाहिए। सेकण्ड में मैं अपने मन को ऑर्डर करूं कि व्यर्थ खत्म हो जाए, समर्थ चले। तो एक सेकण्ड में हम अपने मन पर ऑर्डर कर सकें और उसी ऑर्डर के अनुसार एक सेकण्ड में हम व्यर्थ को फुलस्टॉप लगा सकें, इसकी प्रैक्टिस काम करते हुए भी होनी चाहिए। हमारा पेपर अचानक होना है और अचानक किस समय कैसे भी हो सकता है इसलिए हमारे मन पर हमारा कन्ट्रोल हो तो सेकण्ड में पास हो जाएंगे। अगर कन्ट्रोल नहीं है तो प्रयत्न करेंगे पास होने का लेकिन प्रयत्न में टाइम लग सकता है।

हमारा मूल मन्त्र है मन-मनाभव, मन अपने ऑर्डर में रहे और जहाँ लगाने चाहें वहाँ ही लगे, जितना समय लगाना चाहें वो ऑर्डर में रहे। ये है मन-मनाभव। बाबा कहते बच्चे इस मन-मनाभव के मंत्र को यंत्र बना दो तो सफलता मिल जाएगी। तो इस मंत्र को यंत्र मुआफिक सेकण्ड में मैं यूज़ कर सकूं ये प्रैक्टिस बहुत-बहुत जरूरी है। बाबा ने कहा था कई बच्चे कहते हैं कि वैसे तो ठीक हैं लेकिन जब कर्मयोगी बनते हैं तो डबल काम हो जाता है, उस समय हमारी प्रैक्टिस थोड़ी और होनी चाहिए। इसके लिए कर्मयोगी बनते समय सोचो कि मैं आत्मा करावनहार हूँ और यह कर्मेन्द्रियां करनहार हैं। तो जब अपनी सीट पर सेट होंगे, तो सीट पर बैठे हुए मालिक का सब ऑर्डर मानते हैं। अगर आपकी कर्मेन्द्रियां आपका कहना नहीं मानती हैं तो इससे सिद्ध है कि आप अपनी सीट पर सेट नहीं हैं। आपकी सीट है मैं मालिक हूँ, अधिकारी हूँ, मालिक को तो पॉवर होती है ना, ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ। ऑलमाइटी अथॉरिटी का बालक हूँ, इस सीट पर सेट होके फिर कर्मयोग के टाइम ट्रायल करो तो सहज हो जाएगा।

तो इस पर हमारा अटेन्शन होना चाहिए क्योंकि अचानक पेपर होना है तो कर्मयोग के टाइम भी हो सकता है। इसलिए बाबा अभी इसी प्वाइन्ट पर विशेष अटेन्शन खिंचवा रहा है। मेहनत तो हमको करनी पड़ेगी ना, सीट पर सेट हमको होना पड़ेगा इसलिए बाबा हमको कहता है बहुत समय का अभ्यास नहीं होगा तो उस समय हम उसको कन्ट्रोल कर नहीं सकेंगे।

जब आत्म-अभिमानी शब्द कहते हैं तो आत्मा के अभिमान कौन से हैं? बाबा जो हमें समय प्रति समय स्वमान बताते हैं, जैसे बाबा कहते हैं तुम विश्व परिवर्तक हो, हम आत्मा हैं लेकिन आत्मा के साथ-साथ हम ये स्वमान याद रखें, आत्मा तो लाइट है, लाइट रूप होकर हम चलते हैं लेकिन साथ में अगर स्वमान भी याद रहे तो देह अभिमान खत्म हो जाएगा। जैसे बाबा कहते हैं आप परमात्म दिलतख्त के मालिक हो, यह कितनी बड़ी बात है, अगर हम सोचें कि मैं आत्मा हूँ, आत्मा के साथ मैं कौन-सी आत्मा हूँ! तो हमारी आत्मा का अभिमान ये है कि जो बाबा स्वमान देते हैं उस स्वमान में स्थित रहें और स्वमान में स्थित रहने से बहुत रमणीक हो जाता है। जैसे मैं विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ, ये कितने मर्तबे की बात है। उस स्थिति में अगर हम स्थित रहें तो सारा दिन हम अलर्ट रहेंगे।

ऐसी स्थिति हो जो निंदा-स्तुति, मान-अपमान में समान रहें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा की मुरली सुनने के बाद हमारा दिल कहता था कि बाबा से चिटचैट करें, बाबा भी कहता है मुरली के बाद आपस में मुरली रिवाइज़ करो क्योंकि तुरन्त रिवाइज़ करते हैं तो दिनभर याद रहती है। यह मुरली के बाद बाबा के पास बैठने से पता चलता था कि बाबा मुरली सुनाके कैसे न्यारा हो जाता है। पूछने पर कहता था कि कल्प पहले सुनाया था, फिर कल्प के बाद सुनाऊंगा। बच्ची, गोल्डन वर्सन्स नेवर रिपीट। अपने को कितना अच्छा शिक्षक मिला है, कितनी मीठी-मीठी बातें सुनाता है। अन्दाजा लगा के देखो, इतना प्यारा बाबा सारे कल्प में फिर नहीं मिलेगा।

रूखेपन का संस्कार भी बहुत खतरनाक है। रूखे रहेंगे, समझेंगे काम में बहुत बिज़ी हूँ या फिर अभिमान बिज़ी कर देता है। रूखेपन में कितना नुकसान है। तो रूखी रोटी खाके सूखा हो गया वो औरों को क्या सुखी करेगा! किसी भी गुण की वैल्यू बहुत है। बाबा ने ऐसा खज़ाना दिया है, जो आत्माएं बाबा के घर आकर माला-माल हो जाएं।

चार बातें हमारे अन्दर स्पष्ट हैं, जो बाबा कहते थे बच्चे ज्ञान ऐसा है जैसे अन्धे के आगे आइना। हो अन्धा, आइने के सामने आये तो दिखेगा कैसे! पर यह आइना ऐसा है जो अन्धा भी देख सकता है। ऐसा पॉवरफुल आइना हो जो दूसरों को कुछ कहे नहीं, अपने आप अपने को देखने लग पड़े, न सिर्फ देखने लगे, बनने लग पड़े। चार बातें हैं, भावी के साथ भाग्य, भगवान और समय। चारों का मेल है। भगवान ने बताया अभी तेरी यह भावी बनी पड़ी है। बाबा कितना अच्छा है सोचो तो सही। फिर बाबा कहेगा तू कितनी अच्छी हो। बाबा बाप कितने सुन्दर हो, सुन्दर इतना है जो हमें काले से सुन्दर बना देता है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। हम तो झूठे बन गए थे, बॉडी कॉन्शियस बन गए थे। आत्म-अभिमानी बनाकर ऐसा पकड़ा है जो पुराने स्वभाव-संस्कार से छूट गए।

तो भावी बनी पड़ी है, पर बनानी भी है, यह समझ दी है। ऐसे नहीं जो बना हुआ होगा। अभी यह टाइम है बनाने का। तो चारों में से महिमा किसकी ज़्यादा करें? जिसने ज़्यादा भक्ति की है वो पहले बाबा से मिलता है। फट से मिलता है। कर्म तो हमें गर्भ तक भी नहीं छोड़ते हैं। यहाँ से भल शरीर छोड़ा, पर गर्भ के बाहर भी निकलेगा तो उसी कर्म के अनुसार निकलेगा। बाबा ने समझाया है कि अभी कर्म का हिसाब-किताब खत्म करो, नहीं तो गर्भ तक भी हिसाब-किताब नहीं छोड़ेगा। सदाकाल का सुख, अविनाशी सुख जो बाबा दे रहा है वो सुख अपने आप सफलता पाने के लिए है। किसी के साथ द्वेष भाव रहने में कोई सफलता नहीं है। ऐसे नहीं कि जो हमारी प्रशंसा करे वो हमारा मित्र है और निन्दा करे वो शत्रु है, नहीं। निन्दा-स्तुति, हार-जीत में समान बनें, तब कहेंगे ज्ञान अन्दर गया है। ज्ञान है नॉलेज, योग है याद। ऐसी याद जिससे मान-अपमान, निंदा-स्तुति में समान रहें। जिसका नाम लो उसके अनुसार नैन, चैन हो जाएं वह कोई ज्ञान नहीं है।

हमारी ज़ीरो स्थिति ही हमें हीरो बनाती है

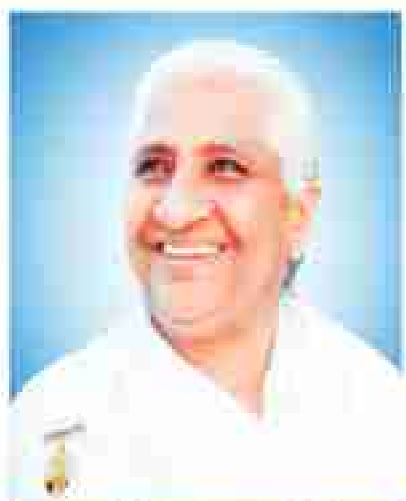
राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम बच्चे इतने पद्मापद्म भाग्यशाली हैं, जो हमारे कदम-कदम में पद्म हैं। स्वयं भगवान हमारे भाग्य का गायन करता है। तो सोचो हम कितने भाग्यवान हैं। अपने आपके भाग्य को स्वयं ही सराहना करो। अगर स्वयं अपना भाग्य देख हर्षित रहेंगे तो कभी गम नहीं आएगा। यह भी सोचो कि हमें भाग्यवान क्यों कहा? क्योंकि हम सभी हीरो-हीरोइन हैं। जो ड्रामा में हीरो-हीरोइन पार्टधारी होते हैं, उनके ऊपर ड्रामा के डायरेक्टर का विशेष अटेन्शन होता है। उनकी वैल्यू को भी जानते हैं, क्योंकि सारे फिल्म की आकर्षण हीरो-हीरोइन पार्टधारी पर होती है। उन्हें सब बातों की एक्टिंग करनी आती है। राजा का भी पार्ट एक्यूरेट बजाएगा तो दास-दासी का भी पार्ट एक्यूरेट बजा लेगा। वह एक्टिव और ऑलराउण्ड होता।

हीरो पार्टधारी माना हर बात का अनुभवी, जानकार। तो हम-आप सभी सारे कल्प के अंदर हीरो-हीरोइन हैं। संगम पर बाबा हमें इतना महान बनाता है, एक्टिव बनाता है जो सारे कल्प में हम महान रहते हैं। अभी हम सर्व सम्बन्ध एक बाप से जोड़ते, बाप की सारी नॉलेज को स्वयं में धारण करते, बाप के समान बनते हैं, यह भी हम सभी का पार्ट है। जैसे बाप स्वयं ज़ीरो है, ऐसे हमें भी ज़ीरो बनाकर हीरो बनाता है। जैसे बाप वैसे हम बन जाते हैं। बाप समान निराकारी बनने का, फिर निराकार बाप को प्रत्यक्ष करने का भी हमारा पार्ट है। सर्विस करके बाप को प्रत्यक्ष करने का भी पार्ट है। स्वर्ग की नई राजधानी स्थापन करके सूर्यवंशी घराने की प्राइज़ लेने का भी पार्ट है। महाराजा-महारानी व रॉयल फैमिली की विजयी माला बनने का भी पार्ट है। फिर द्वापर से लेकर आपेही पूज्य, आपेही पुजारी बनने का पार्ट है। फिर अन्त में सारी नॉलेज को धारण करके मास्टर नॉलेजफुल बनने का भी हमारा पार्ट है। ऐसे हैं हम हीरो पार्टधारी।

इस ड्रामा में आदि से अन्त तक हम हीरो हैं। संगम पर हमें बाबा लाइट का ताज देता, शक्तियों की माइट का भी ताज देता। हम आधाकल्प डबल ताजधारी रहते हैं। इस समय हम गरीब निवाज़ बाबा के बच्चे हैं। लेकिन हम हैं डबल ताजधारी। दुनिया वाले चिंताओं में रहते, और हम ज्ञान रत्नों से भरपूर होकर खुशियों के गीत गाते। तो क्या आप सब अपने को ऐसा हीरो समझते हो? वैसे भी हीरे का दाम बहुत होता है। हीरो बनना है तो अपनी स्थिति ज़ीरो बनाओ। तो एक तो हम सच्चे हीरो अर्थात् डायमण्ड हैं, दूसरा हम हीरो पार्टधारी हैं। जिस घड़ी जो पार्ट है- उसी एक्यूरेट बजाओ। आकर्षण वाला बजाओ। लेकिन पार्ट बजाते भी साक्षी रहो। साक्षी दृष्टा होकर पार्ट बजाने का बैलेन्स रखो। सारी नॉलेज को ऐसा ग्रहण कर लो जैसे कहते हैं चिड़ियों ने सागर को हप किया। जो सारी नॉलेज को हप कर नॉलेजफुल बनता उसे किसी भी बात में शंका नहीं होती। ज्ञान सागर बाबा हमें रोज़ नई प्वाइंट्स सुनाकर खज़ाने से भरपूर करता है।

हम सबका प्यार नॉलेज से, पढ़ाई से हो। जिसका पढ़ाई से प्यार है, उसका विचार सागर मंथन भी चलता है। उसे नशा रहता है कि हम कितने बड़े जौहरी हैं। बड़े से बड़े हीरे भी हमारे पास हैं तो छोटे से छोटे हीरे भी हमारे पास हैं। कोई भी हमारे पास आये तो हम उसे ज्ञान रत्नों की ज्वैलरी पहना सकते हैं। जिसके पास सच्चे हीरों की ज्वैलरी होगी उसकी झूठे हीरों पर नज़र नहीं जा सकती। इसलिए बाबा कहते दुनिया की झूठी जवाहरात को, अथवा बातों को देखते भी नहीं देखो, सुनते भी नहीं सुनो। क्योंकि हमें सच्चे जवाहरात मिल गए। बाबा ने हमें जवाहरात से सजाया है। ज्ञान रत्नों की ज्वैलरी से हमें खूब सजाया है। हमें सर्वशक्तिवान् बाबा ने सर्वशक्तियां दी हैं। सबसे बड़ी शक्ति हमें बाबा ने प्रेम की दी है। एक बाप के सब बच्चे हैं इसी एक दृष्टा ने हमें प्रेम की मूर्त बनाया है। दुश्मन को भी दोस्त बना दिया है।

ब्राह्मण अर्थात् बी.के. कभी यह नहीं कह सकते कि यह मेरा दुश्मन है। दुनिया की भाषा में है कि यह विपक्ष का है, हमारी भाषा में न पक्षपात है, न दुश्मनी है। दुनिया विनाश के साधन बनाने वालों को दुश्मन समझती लेकिन कल्याणकारी बाबा कहते कि ड्रामा के अन्दर जो कुछ बना है यह सब कल्याणकारी है। भल लोग बाबा की ग्लानी करते, बाबा समझानी देगा लेकिन फिर कहेगा यह भी ड्रामा। तो हमारी दृष्टि सबके लिए कितनी प्रेम भरी, रहम भरी चाहिए।

दिया का दीपोत्सव

"जिन्होंने निराशाओं को उमंग-उत्साह दिया, भटके हुए को राह दिखाई, कमज़ोरों को ताकत दिया, भूले हुए को ज्ञान दिया, हारे हुए को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया ऐसे जीवन भर में हरेक को दिया है, अंधकार के फँसे हुए को प्रकाश दिया- ऐसे देते-देते- वे देवतुल्य बन गए, विकारों पर विजय प्राप्त कर ली उनका दीपोत्सव।"

दीपावली जगमगाते हुए दीपों की रोशनी का त्योहार है तो आइए इस बार एक नई सोच के साथ एक नई तरह से दीपावली मनाएं। इस पर्व के हर एक रीति-रिवाज़ के पीछे के आध्यात्मिक रहस्य को गहराई से जानें तथा अपने जीवन को एक नई सोच और एक नई दिशा दें।

इस नए साल पर नए युग के आगमन का शुभारम्भ करें। अपने यथार्थ अस्तित्व को जानकर परमपिता परमात्मा से जुड़कर अपना आत्मा रूपी दीया जलाएं। और हर एक को स्नेह भरी शुभकामनाओं और शुभभावनाओं रूपी अमूल्य गिफ्ट दें। इस दीपावली स्वास्तिक बनाते हुए उसकी चारों भुजाओं के द्वारा इस धरा के चारों युगों को जानें। साथ ही दीपावली के स्वादिष्ट 'दिलखुश मिठाई' का स्वाद स्वयं भी चखें और औरों को भी बांटें। भाईदूज के तिलक के महत्व को जानकर सदा ही अपनी आत्मिक स्मृति का तिलक हर दिन अपने मस्तक पर सजाएं।

इसके साथ ही दीपावली पर हर साल नई चीज़ों की खरीदारी करते आये हैं। इस बार उन चीज़ों के साथ नए संस्कार भी अपने जीवन में धारण कर नवीनता लाएं जिससे आपके मन में और जीवन में खुशहाली छा जाए। और अतः यह सब अपने जीवन में धारण करने से अपने जीवन के सभी बही-खाते को सही तरीके से सेटल कर पाएंगे।

दीया के महत्व को जानें

दीपावली माना 'दीपों का त्योहार'। जिसे दीपमाला भी कहते हैं, जिसका अर्थ है 'एक दीये से दूसरे दीये को जलाना माना ज्योति से ज्योति जगाना'। हम सभी ने अपने-अपने घर में यह सुना होगा, देखा होगा कि घरों में जलने वाले दीये की लौ कभी भी बुझ न पाए वर्ना अशुभ होगा, यह हमेशा जलती रहे, प्रज्वलित रहे। तो जीवन में सबकुछ शुभ ही शुभ होगा। लेकिन क्या कभी हमने इसमें छीपे रियल अर्थ को जानने और समझने की कोशिश की है कि कैसे एक दीये की लौ से जीवन में शुभ या अशुभ हो सकता है।

दीपावली पर्व के सन्देश द्वारा दीये/दीपक के रियल स्वरूप को समझते हैं...

दीया/दीपक- मिट्टी का दीया माना मिट्टी का शरीर और उसमें आत्मा रूपी बाती को जलाने के लिए घी या तेल के रूप में परमात्मा का ज्ञान चाहिए, जिससे वो आत्मा हमेशा जागृत रहेगी और अपने प्यार, शान्ति और खुशी के ओरिजनल संस्कारों से अपने आस-पास की आत्माओं को भी जागृत कर देगी। इसलिए जब भी जीवन में कोई तूफान आए और हमारे दीये की लौ थोड़ा टिमटिमाने लगे तो हमें तुरन्त कुछ क्षण रुककर परमात्मा की याद में उनके ज्ञान का घी डालकर अपनी लौ को वापस तेज़ कर देना है।

नये साल, नये युग की नयी शुरुआत

भारत के कुछ क्षेत्रों में दीपावली का पर्व नये साल के रूप में भी मनाया जाता है। तो जब हम अपने रियल अस्तित्व को जान जाते हैं, आत्मा जागृत हो जाती है तो हमें, सभी को नये साल के साथ-साथ नये युग की दुआएं व शुभकामनाएं देनी चाहिए, क्योंकि ऐसे ही हम इस सृष्टि पर सतयुग ला सकते हैं, क्योंकि हम मन और बुद्धि से सबको देने वाली आत्माएं हैं जिससे सभी के संस्कार बदल जाएंगे और सृष्टि पर एक नया सतयुगी सवेरा आयेगा।

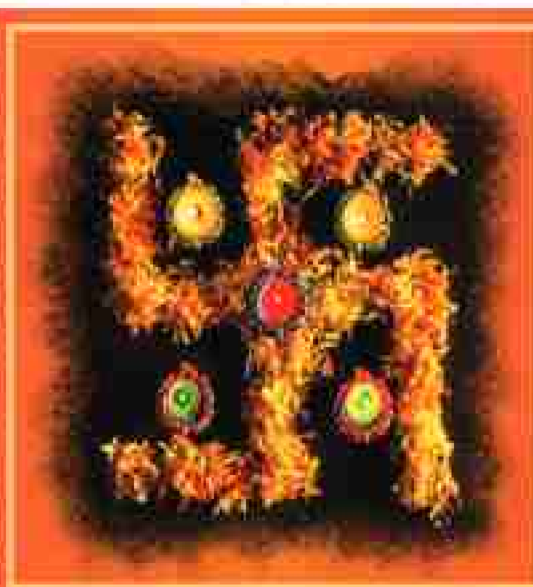

स्वास्तिक क्यों बनाते हैं...

दीपावली पर्व या अन्य पूजन की शुभ शुरुआत करते हुए बनाए जाने वाले 'स्वास्तिक चिन्ह' के आध्यात्मिक महत्व को समझते हैं। हम सभी दीपावली के दिन स्वास्तिक बनाते हैं और श्रीलक्ष्मी जी का आह्वान करते और गणेश-लक्ष्मी का पूजन करते हैं।

स्वास्तिक चिन्ह का रियल अर्थ

स्वास्तिक का सही आध्यात्मिक अर्थ है अस्तित्व, जोकि आत्मा की यात्रा को दर्शाता है। स्वास्तिक की चार भुजाएं चार युगों के बारे में बताती हैं कि पहले आत्मा कहाँ थी, अभी कहाँ है और आगे कहाँ जाना है? तो अगर हम देखें तो स्वास्तिक का पहला भाग एक हॉरिजोंटल लाइन है जोकि देने का भाव दर्शाती है। जैसे हाथ देने की मुद्रा में होते हैं। ये सतयुग को दर्शाता है जिसे हम स्वर्ग, पैराडाइज़, जन्नत, बहिश्त आदि नामों से भी जानते हैं। इस युग में सभी आत्माएं भरपूर थीं, उनकी ज्योति जगी हुई थी, वह सबको दुआएं देने वाली थीं।

सतयुग के बाद आता है त्रेतायुग, जिसमें स्वास्तिक की रेखा नीचे की ओर जाती है जिसका अर्थ है, आत्मा की शक्ति थोड़ी-थोड़ी कम होना शुरू हो गई है।

उसके बाद द्वापरयुग में स्वास्तिक की रेखा का हाथ जैसे मांगने की मुद्रा में आ जाता है, जिसमें आत्मा भूल गई कि वो भरपूर है। यह जो सबको देने वाली आत्मा थी, अब उसने दूसरों से मांगना शुरू कर दिया है।

और आखिर में कलियुग माना, जब मांगने के बाद भी नहीं मिला तो, स्वास्तिक का हाथ ऊपर की ओर चला जाता है। यानी मारने की मुद्रा में आ जाता है, तब शुरू होता है कलह-क्लेश का युग।

इस तरह से हमने स्वास्तिक के सही अर्थ को समझा। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि, अभी घोर कलियुग का, अंधकार का समय चल रहा है जिसके बाद सतयुगी सवेरा आना ही है।

गाज़ियाबाद-कवि नगर(उ.प्र.)। कवि नगर ज़ोन के ए.सी.पी. भास्कर वर्मा को राखी बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. राजेश बहन। साथ हैं ब्र.कु. चंचल, ब्र.कु. छाया, महानगर जिला प्रतिनिधि विनीत शर्मा, मण्डल महामंत्री अभिजीत मुखर्जी तथा अन्य।

करतारपुर-पंजाब। पुलिस उपाधीक्षक विजय कमरपाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सीमा। साथ है ब्र.कु. निशा।

पनियरा कस्बा-उ.प्र.। खोरी थानाध्यक्ष पंकज त्रिपाठी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सीता। साथ है अन्य पुलिस अधिकारीगण।

भरतपुर-डीग(राज.)। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में आईपीएस,पुलिस अधीक्षक ओमप्रकाश मीणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रवीणा।

पटियाला-पंजाब। रक्षाबंधन के अवसर पर एस.एस.पी. वरुण शर्मा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राखी।

बेतिया-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय एवं जीएमसीएच ब्लड बैंक के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपवन भवन में रक्तदान शिविर एवं रक्तदान जागरूकता अभियान का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. अंजना, बेतिया नगर निगम मेयर गरिमा देवी सिकारिया, पुलिस उपाधीक्षक रौशन देवानंद राउत, जी.एम.सी.एच. सुपरिंटेंडेंट डॉ. सुधा भारती, व्यवसायी अजय कुमार केडिया तथा अन्य।

जमशेदपुर-पतरातू(झारखंड)। रक्षाबन्धन पर्व पर एसडीपीओ गौरव गोस्वामी,पतरातू अनुमंडल को राखी बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रोशनी।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। रक्षाबंधन के अवसर पर डी.सी.पी. निधिन वल्सन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गुंजन बहन। साथ है अन्य बहन।

रांची-झारखंड। रांची के राजभवन में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से स्नेह मिलन के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. प्रदीप तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई।

नई दिल्ली-हरिनगर। मुख्यमंत्री आवास पर दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से स्नेह मुलाकात कर शॉल ओढ़ाकर व फूलों का गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दिल्ली ज़ोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. पूनम,शालीमार बाग, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. विनीता तथा अन्य।

नोएडा-सेक्टर 50(उ.प्र.)। केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार में माननीय मंत्री चिराग पासवान से स्नेह मुलाकात के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. चित्रलेखा,कुण्डली, ब्र.कु. पलक, ब्र.कु. रमा,सिरीफोर्ट, ब्र.कु. रमेश तथा अन्य।

तिंवरी-ओसियां(राज.)। रक्षाबंधन के अवसर पर विधायक भेरा राम चौधरी(सियोल) को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बीनू।

दिल्ली-आर.के. पुरम। रक्षाबंधन पर आयोजित कार्यक्रम में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में निगम पार्षद धर्मवीर सिंह, वरिष्ठ सहायक सीजीडीए श्रीमती मौशमी रुद्र, एच.ओ.डी. सीजीडीए श्रीमती दीपिका रघुवंशी, विश्लेषक अनिल शर्मा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनीता एवं ब्र.कु. मनीषा।

बरनाला-पंजाब। रक्षाबंधन पर्व पर रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. बृज बहन, ब्र.कु. सुदर्शन बहन, ब्र.कु. कौशल मेनन, डीसी टी. बेनिथ, एडीसी सतवंत सिंह,पीसीएस एवं एडवोकेट रोशन लाल।

मानसिक तनाव कैसे दूर हो...!!!

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

मेडिटेशन माना माइंड को रिलेक्स करना...

- गतांक से आगे...

समस्याओं में हमें समाधान प्राप्त हो जाए उसके लिए कोई दवाई तो है नहीं। ले लिया और खत्म हो गई बात, नहीं। उसके लिए भी हमें आवश्यकता है जागृति लाने की। तब हम आने वाले समय में खुद को भी हैंडल कर सकेंगे, परिस्थिति को भी हैंडल कर सकेंगे, और दूसरों को भी सहारा दे सकेंगे। धैर्य दे सकेंगे, और ये समय बहुत फास्ट दिखाई दे रहा है। अब आगे पढ़ेंगे...

अब ये सब होगा कैसे? जब हमारी स्पिरिचुअल इम्युनिटी बढ़ेगी। और उसको बढ़ाने के लिए हमें चाहिए तीन चीज़ें - 1. ठीक से भोजन चाहिए। वो भोजन नहीं जो हम शरीर को देते हैं, मन का भोजन। और मन का भोजन क्या है, चिंतन। अच्छा चिंतन चाहिए। अच्छा चिंतन कहाँ से मिलेगा? ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान एक मात्र स्रोत है जहाँ से हमें अच्छा चिंतन मिलता है। ये अच्छा चिंतन भोजन है मन का। मन के द्वारा आत्मा को प्राप्त होता है। मन सशक्त बनता है, आत्मा शक्तिशाली बनती है लेकिन आज अगर किसी को भी कहा जाये कि ज्ञान की, आध्यात्मिक ज्ञान की बातें सुनने के लिए आओ, तो क्या कहेंगे? टाइम नहीं है। टाइम कहाँ जाता है? टाइम अगर प्रैक्टिकल देखा जाए तो मनुष्य के पास है। ऐसे नहीं कि नहीं है।

जैसे मान लो कि किसी को हार्ट अटैक आये और वो डॉक्टर के पास जाता है और डॉक्टर साहब उसे कहेगा कि अगर जीना है तो रोज़ सुबह आधा घंटा पैदल चलना होगा। अगर तब भी वो डॉक्टर साहब से कहे कि सुबह तो बहुत मुश्किल है, मेरा सारा कारोबार सुबह-सुबह शुरू हो जाता है, सुबह तो आधा घंटा निकालना बड़ा मुश्किल है, और शाम को भी देखेंगे कि आधा घंटा मिलेगा तो जाऊंगा। तो डॉक्टर साहब क्या कहेंगे? मरो फिर, यही कहेंगे। अगर आपको खुद की हेल्थ के विषय में जागृति नहीं है, अगर आप अपने लिए टाइम नहीं निकाल सकते तो फिर तो मौत को कोई रोक नहीं सकता है। अगर उसको जीना है तो टाइम मैनेजमेंट तो करना होगा ना!

ठीक इसी तरह मन को सशक्त करने के लिए, आत्मा को सशक्त करने के लिए उसका भोजन है ज्ञान। ज्ञान का मनन-चिंतन रोज़ कम से कम आधा-पौना घंटा करें। अगर हमें आने वाले समय के लिए अपने आपको तैयार करना है तो। दूसरा- मन को आराम भी चाहिए। आराम कैसे मिलेगा? मन को रिलेक्स करना बहुत ज़रूरी है। और रिलेक्सेशन टेक्निक श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने अर्जुन को ध्यान-योग सिखाया। मेडिटेशन, जब हम मेडिटेशन में बैठते हैं तो हम अपने मन की गति को शांत करते हैं। इतना फोर्स क्यों चल रहा है? किसी साइकेट्रिक ने बताया कि मनुष्य अगर कम से कम गति से सोचे तो भी एक मिनट में उसके मन के अन्दर 25 से 30 विचार आ जाते हैं। सोचो कम से कम

> **ये नहीं कि बातें नहीं आयेंगी, ये नहीं लोग उल्टी हरकतें नहीं करेंगे, सब होगा। लेकिन अगर आपका माइंड फोकस है तो आप खुद को हैंडल कर सकेंगे।**

गति से सोचे तो और अधिक से अधिक गति से सोचे तो पचास विचार। और टेंशन जब होता है तब 55-60 विचार आ जाते हैं एक मिनट में।

हर मनुष्य के मन में चार प्रकार के विचार आते हैं। पहले प्रकार के विचार हैं- पॉज़िटिव विचार,अच्छे विचार,वैल्यू बेस्ड थॉट्स। दूसरे हैं- निगेटिव विचार,बुरे विचार, हर बात में बुराई को सोचना, कमज़ोरियों को सोचना, डर-भय को लेकर विचार आना। तीसरे प्रकार के विचार हैं-आवश्यक विचार,कारोबार के विचार, ये करना है, वो करना है, इसको कहना है और चौथे प्रकार के विचार हैं- फालतू विचार। जब मन के पास कुछ सोचने के लिए नहीं है तो बीती हुई बातों को सोचता है। अगर ऐसा करते तो ऐसा होता, ये कहते तो अच्छा होता। लेकिन अब तो हो गया ना। अब क्या करना है वो नहीं सोचते। थोड़ा-सा अगर सेल्फ एनालिसिस करें तो वर्तमान समय दुनिया में मनुष्य के अधिकतर विचार कौन से होते हैं इन चारों में से? निगेटिव विचार आते हैं, फालतू विचार आते हैं और पॉज़िटिव विचार ना के बराबर। इसलिए रिएक्शन ज़्यादा निकलता है। तो मेडिटेशन माना माइंड को रिलेक्स करना। और जब पॉज़िटिव विचारों का चिंतन हम आरम्भ करते हैं तो धीरे-धीरे हमारी मनोस्थिति पॉज़िटिव होने लगती है, सशक्त होती है, शक्तिशाली होती है।

तो रोज़ सुबह-सुबह 20 मिनट मेडिटेशन अगर आपने कर लिया तो देखिएगा कि आप अपने को कितना चार्ज महसूस करेंगे। माइंड पॉवरफुल होगा। क्यों 20 मिनट कहा मैंने? क्योंकि मेडिकल साइंस द्वारा ये प्रमाणित है कि एक व्यक्ति अगर पांच मिनट गुस्सा करता है ना, तो दो घंटे की कार्यक्षमता उसकी जल जाती है। वो दो घंटा क्या करेगा? दस लोगों को ढूंढेगा, वहाँ अपनी बात रखेगा, देखो ये रोज़ ऐसा करता है इसलिए मुझे गुस्सा करना पड़ा। जब दस लोग ये कहने वाले मिल जाते हैं कि बहुत अच्छा किया, तब जाकर थोड़ी ठंडक होती है कि मैंने जो किया ना वो गलत नहीं किया। और दस में से एक ने कह दिया कि आपने ठीक नहीं किया तो क्या होगा? फिर से भड़क जाएंगे।

सोचो जिस दिन सुबह-सुबह आपने बीस मिनट गुस्सा कर लिया तो आठ घंटे की कार्यक्षमता जल जाती है। कभी-कभी आपने जीवन में अनुभव किया होगा कि कोई-कोई दिन बहुत खराब जाता है, कोई काम नहीं होता है। कोई काम में सक्सेस नहीं होता है। तो फिर क्या कहते हैं कि पता नहीं आज किसका मुँह देखा था। किसी का नहीं खुद का ही देखा था आइने में। तो इसीलिए कहा सुबह-सुबह बीस मिनट मेडिटेशन करो। माइंड को फोकस करो, एकाग्र करो। ये नहीं कि बातें नहीं आयेंगी, ये नहीं लोग उल्टी हरकतें नहीं करेंगे, सब होगा। लेकिन अगर आपका माइंड फोकस है तो आप खुद को हैंडल कर सकेंगे। दूसरे व्यक्ति को हैंडल कर सकेंगे और सिचुएशन को भी हैंडल कर सकेंगे। तो मॉर्निंग मेडिटेशन और शाम को 20 मिनट मेडिटेशन सोने से पहले। ताकि नींद अच्छी आए और सुबह फ्रेश होकर आप कार्य कर सकें। इतना टाइम मिलेगा खुद के लिए कि नहीं मिलेगा? अगर आने वाले समय के लिए अपने आपको चार्ज रखना हो, पॉवरफुल बनाना हो तो आप एक लीडर बनें। ताकि अनेकों को आप गाइड कर सकें। सही रास्ता दिखा सकें। उसके लिए खुद के लिए खाली 24 घंटे में से एक घंटा निकालना है। कर सकते हैं?

तिनसुकिया-असम। ब्रह्माकुमारीज़ तिनसुकिया द्वारा पूर्वोत्तर भारत में अपनी आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवाओं की स्वर्ण जयंती कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करने के पश्चात् शिवध्वजा लहराते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी,राष्ट्रीय समन्वयक,महिला प्रभाग, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल,अध्यक्ष,वैज्ञानिक,अभियंता एवं वास्तुविद प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़, सर्बानंद सोनोवाल,केन्द्रीय मंत्री- पोत, नौवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय तथा आयुष मंत्रालय,भारत सरकार, राहुल प्रशांत,कार्यकारी निदेशक,इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड,डिगबोई रिफाइनरी, विधायक संजय किशन तथा अन्य।

रिगार्ड और रिस्पेक्ट के बीच अंतर समझने से व्यवहार अच्छा रहेगा

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ

– रिगार्ड का अर्थ संदर्भ पर निर्भर करता है, जबकि रिस्पेक्ट एक विशिष्ट भावना और व्यवहार है जो दूसरों की गरिमा को स्वीकार करता है।

– व्यवहार में रिगार्ड बदलता रहता है परन्तु रिस्पेक्ट, सर्व के प्रति एक भीतरी सम्मान की भावना रखनी चाहिए।

जब भी किसी से मिलेंगे, किसी के साथ काम करेंगे, रिश्ता तो निभाएंगे लेकिन हर क्षण ये याद रखेंगे कि वो 'रिश्ता' और वो 'रोल' निभाने वाले वो भी कौन हैं? वो भी आत्मा हैं। अभी तक हमारे सारे जो इंटरएक्शन होते थे वो किस आधार पर होते थे? वो रिश्ता, मैं रिश्ता, वो रोल और मैं रोल। रोल टू रोल कनेक्शन और रिलेशन टू रिलेशन कनेक्शन। लेकिन उसमें क्या होता था, कोई किसी से ऊँचा है, कोई किसी से नीचा है। तो कोई किसी से इन्फीरियर फील करता है, कोई किसी से सुपीरियर फील करता है। लेकिन अब हमें स्मृति आई है, वो सिर्फ एक रोल है। हम कौन हैं? मैं एक आत्मा हूँ। वो कौन है? वो भी एक आत्मा है। जब आत्मा और आत्मा एक-दूसरे से बात करेंगे तो कौन सीनियर और कौन जूनियर होगा? कौन बड़ा होगा और कौन छोटा होगा? तो सीनियर और जूनियर उम्र में बड़े और छोटे, रिश्ते में बड़े और छोटे। वो सब होगा, समाज की मर्यादाओं के अनुसार भी चलेंगे। वो होता है रिगार्ड। जैसे कोई सीनियर आयेगा तो हम खड़े हो जाएंगे। हम कहीं जायेंगे तो कोई और खड़ा हो जाएगा। ये रिगार्ड है रोल के लिए।

व्यवहार में एक छोटी-सी चीज़ को जोड़ना होगा

लेकिन अब उसमें जो छोटी-सी चीज़ को जोड़ देंगे, अटेन्शन रखेंगे कि रिगार्ड रोल के लिए होगा लेकिन सम्मान हर एक आत्मा के लिए होगा। ये नहीं कि किसी से बहुत प्यार से बात की, किसी से ऐसे ही बात करनी है। किसी से कुछ ज्यादा ही झुक-झुक कर बात की और किसी से अहंकार से बात की। क्या ये हो सकता है कि सभी के साथ व्यवहार एक समान हो? हो सकता या नहीं हो सकता? सभी के साथ जो रिगार्ड(आदर) है वो बाह्य है, वो अलग-अलग होगा। जो अंदर से रिस्पेक्ट(सम्मान) है, वो एक समान होगा।

सबके साथ एक समान होने से अभिमान खत्म होगा

सबके साथ समान होने से व्यवहार सबके साथ समान हो सकता है? सबके साथ एक समान व्यवहार होने से क्या फायदा होगा? सबके साथ एक समान होने से अभिमान जो होगा वो सोल कॉन्शियस मतलब अहंकार खत्म हो जाएगा। अहंकार सभी विकारों की जड़ है। जहाँ अहंकार होगा वहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत होगा। अहंकार मतलब ईगो व ईगो मतलब बॉडी कॉन्शियस। अब मैं कौन हूँ? मैं एक शांत स्वरूप, शक्तिस्वरूप आत्मा हूँ, ये मेरा रोल है। रोल आवश्यक है। लेकिन वो मेरा रोल है। वो मैं रोल नहीं हूँ। अभी तक क्या समझते थे? कि वो मैं रोल था। बस 'मैं' ही मैं हूँ, ये मेरा रोल है, ये मेरी जिम्मेदारी है, ये मेरी पोजीशन। रोल बदलते रहेंगे, रिश्ते भी बदलते रहेंगे। पहले आप किसी के बच्चे थे, फिर आपके बच्चे हैं, रिश्ते बदल गये। तो रिश्ते भी बदलते रहेंगे, रोल भी बदलते रहेंगे, एक चीज़ वही रहेगी कि 'मैं' एक आत्मा हूँ, दूसरी आत्मा से बात कर रही हूँ। अब वो प्रैक्टिस करना है। सबसे मिल रहे हैं, पद अलग-अलग हैं लेकिन हम किससे बात कर रहे हैं? हम 'पद-पोजीशन' से बात कर रहे हैं या व्यक्ति से बात कर रहे हैं? हम किससे बात कर रहे हैं? अगर हम सामान्य रूप से देखें तो हम लोगों से बात नहीं कर रहे होते हैं, हम किससे बात कर रहे होते हैं? हमारे बात करने का तरीका चेंज हो जाता है, हमारा व्यवहार करने का तरीका चेंज हो जाता है। और जितनी बार वो चेंज-चेंज होता रहता है वो अपने ओरिजनैलिटी से हटता जाता है।

तो ठीक है ये प्रैक्टिस करेंगे? क्या प्रैक्टिस करेंगे? जो भाई आपकी कार चला रहे हैं वो कौन हैं? आपमें और उसमें कौन ऊँचा है? ये एक फिल्म की तरह है। एक फिल्म कैसे होती है? एक्टर अलग-अलग होते हैं, उनके रोल अलग-अलग होते हैं लेकिन एक्टर उसमें रोल के हिसाब से सीनियर और जूनियर नहीं होता। अब आत्मा भी अगर हमें देखना है कि कौन, कैसी आत्मा है? वो रोल के अनुसार नहीं, संस्कारों के अनुसार पता चलेगा। इसीलिए संस्कारों अनुसार कहते हैं ये महान आत्मा है, ये पुण्य आत्मा है, ये धर्म आत्मा है। टाइटल किसको मिल रहा है? आत्मा को मिल रहा है। किस आधार पर मिल रहा है? आत्मा के संस्कार और कर्मों अनुसार।

तो ध्यान रखना है- व्यवहार में, बातचीत में मिलने पर कि हम रोल के आधार पर रिगार्ड भी रखेंगे और मैं आत्मा हूँ, हम समान हैं ये याद भी रखेंगे तो सबके प्रति सम्मान बना रहेगा।

देवघर-झारखंड। देवघर एम्स के प्रथम दीक्षांत समारोह के अवसर पर आमंत्रित भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का स्वागत करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीता, ब्र.कु. शिल्पी, ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. सुशील, ब्र.कु. सत्यनारायण, डॉ. राजेश प्रसाद तथा अन्य।

जयपुर-राजापार्क(राज.)। रक्षाबंधन पर्व पर राजस्थान के माननीय उपमुख्यमंत्री राजकुमारी दिया कुमारी, राजस्थान सरकार को राखी बांधते हुए ब्र.कु. स्नेह दीदी। साथ है ब्र.कु. पूजा।

दिल्ली-पंजाबी बाग। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में विधायक कैलाश गंगवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कोकिला।

जालंधर-पंजाब। रक्षाबंधन के अवसर पर जालंधर के डीसी हिमांशु अग्रवाल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात्, समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संतोष बहन, ब्र.कु. वीना बहन, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. सुभाष, डॉ. आर.एल. बस्सन, ब्र.कु. कृष्ण गिलानी एवं ब्र.कु. महेश डोगरा।

सुल्तानपुर-उ.प्र.। उप जिलाधिकारी देवेन्द्र सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता। साथ हैं ब्र.कु. ललिता एवं ब्र.कु. कोमल।

मसौढ़ी-बिहार। भारतीय स्टेट बैंक मसौढ़ी शाखा में आयोजित कार्यक्रम में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. भाई-बहनों के साथ बैंक मैनेजर व बैंक के कर्मचारीगण।

बलिया-उ.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर पुलिस अधीक्षक ओमवीर सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उमा। साथ हैं ब्र.कु. सुमन।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - ₹-200, तीन वर्ष - ₹- 600, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org

नाशपाती पौष्टिक गुणों से भरपूर फल है जिसका आयुर्वेद में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। नाशपाती ऐसा फल है जो पौष्टिक, रसीला और औषधीय गुणों से भरपूर होता है। वैसे तो नाशपाती मधुर, एसिडिक या अम्लीय गुणों वाली, ठंडे तासीर की, वात को कम करने वाली, पित को भी कम करने में मदद करने वाली तथा धातु को बढ़ाने वाली होती है। यह विटामिन, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स का अच्छा स्रोत है।

स्वास्थ्य

नाशपाती करे बीमारियों का नाश

नाशपाती अपने ढेर सारे पौष्टिकता के गुणों के कारण रोगों का उपचार करने में मदद करती है। चलिए नाशपाती के फायदे के बारे विस्तार से जानते हैं कि ये कैसे और किन-किन रोगों में फायदेमंद है।

आँख संबंधी रोगों से राहत

आँख में जलन या आँख में दर्द जैसे किसी भी बीमारी में नाशपाती बहुत फायदेमंद होती है। नाशपाती को पीसकर नेत्र के बाहर चारों तरफ लगाने से नेत्र रोगों में लाभ होता है।

अग्निमांद्य या अपच में फायदे

डाइजेस्टिव ट्रैक्ट में सूजन या इंफेक्शन(संक्रमण) होने पर पेट में सूजन हो जाता है जिसके कारण बदहजमी, एसिडिटी जैसी समस्याएं होने लगती हैं। 15-20 मिली नाशपाती फल के रस में 500 मिग्रा पिप्पली चूर्ण मिलाकर पिलाने से भूख लगती है।

अर्श या पाइल्स से दिलाए राहत

नाशपाती के मुरब्बे में 250मिग्रा नागकेसर चूर्ण मिलाकर सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है। इसके सेवन से दर्द और खून का निकलना कम होता है।

कब्ज से राहत पाने में फायदेमंद

नाशपाती में मौजूद रेचन गुण के कारण यह कब्ज की परेशानियों से राहत दिलाने में लाभदायक होता है। इससे आँतों में जमी गन्दगी को आसानी से मल रूप में निकाला जा सकता है।

कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में लाभकारी

नाशपाती में एक रिसर्च के अनुसार प्रचुर मात्रा में पेक्टिन नामक तत्व पाया गया जोकि कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में मदद करता है।

एनीमिया से बचने के लिए लाभकारी

एनीमिया एक ऐसी बीमारी है जो पित्त दोष के प्रकुपित होने के कारण होती है। इसमें नाशपाती के सेवन से लाभ होता है क्योंकि नाशपाती शीत वीर्य होने के कारण पित्त को शांत करती है साथ ही यह शरीर को आवश्यक पोषण प्रदान करती है। इसके कारण यह एनीमिया के लक्षणों को ही दूर करने में मदद करता है।

त्वचा रोगों से राहत दिलाए

प्रदूषण के कारण आजकल त्वचा संबंधी बहुत तरह से रोग होने लगे हैं। नाशपाती के पत्तों को पीसकर त्वचा पर लगाने से त्वचा संबंधी समस्याओं में लाभ होता है तथा घाव में लगाने से घाव जल्दी भरता है।

नाशपाती का उपयोगी भाग

आयुर्वेद में औषधि के तौर पर नाशपाती के फल और पत्ते का सेवन किया जाता है।

नाशपाती का इस्तेमाल कैसे करना चाहिए

बीमारी के लिए नाशपाती के सेवन और इस्तेमाल का तरीका पहले ही बताया गया है। अगर आप किसी खास बीमारी के इलाज के लिए नाशपाती का उपयोग कर रहे हैं तो आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह जरूर लें।

नाशपाती खाने के नुकसान

नाशपाती के अधिक सेवन से कफ दोष बढ़ता है इसके कारण खांसी-जुकाम होने लगता है क्योंकि इसमें कफ को बढ़ाने वाला शीत गुण पाया जाता है।

मुजफ्फरपुर-बिहार। पूर्वी के जिला अध्यक्ष भाजपा विवेक कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए बिहार एवं झारखंड सब जोन प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी।

मेरठ-उ.प्र.। मेरठ के जिलाधिकारी डॉ. विजय कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी।

गया-सिविल लाइन(बिहार)। गयाजी जिलाधिकारी शशांक शुभंकर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शीला दीदी।

अल्मोड़ा-उत्तराखंड। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर जिलाधिकारी आलोक कुमार पांडे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

मुरादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के आत्मज्योति भवन में 'शांति, एकता और विश्वास को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका' विषय पर आयोजित मीडिया सेमिनार के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी डॉ. ब्र.कु. शांतनु, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आशा, विधायक ठाकुर रामवीर सिंह, प्रेस क्लब के उपाध्यक्ष शिशिर गुप्ता, टीवी 9,दिल्ली के एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर पंकज त्रिपाठी, एडवोकेट मनोज गुप्ता, आईएफटीएम यूनिवर्सिटी के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष राजेश कुमार शुक्ला, टीवी18 के डिप्टी एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर अतुल राय, डिप्टी न्यूज एडिटर फ्रेमर एआई नितेश ओझा, कार्यक्रम के संयोजक मुकेश कुमार कश्यप, कार्यक्रम संचालक डॉ. अर्चना शर्मा तथा अन्य की उपस्थिति रही।

नई दिल्ली-हरि नगर। सेवाकेन्द्र पर कुमारों के लिए आयोजित 'कुमार जीवन, वरदानी जीवन' विषय पर भट्ठी के पश्चात् समूह चित्र में सभी कुमारों के साथ दिल्ली जोन निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. रितु एवं राजयोगी ब्र.कु. पीयूष।

परमात्म ऊर्जा

अशान्ति के बीच शान्ति की स्थिति बनाने का अभ्यास चाहिए

साइलेन्स की स्थिति में जब चाहो तब स्थित हो सकते हो क्योंकि आपका अनादि स्वरूप ही स्वीट साइलेन्स है। आदि स्वरूप आवाज़ में आने का है लेकिन अनादि अविनाशी संस्कार साइलेन्स के हैं। अनादि संस्कार इमर्ज करने से स्वीट साइलेन्स का अनुभव होगा। चारों तरफ कितना भी वातावरण हलचल वाला हो लेकिन आवाज़ में रहते आवाज़ से परे की स्थिति का अभ्यास अभी बहुत काल का चाहिए। शान्त वातावरण में शान्ति की स्थिति बनाना यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन अशान्ति के बीच आप शान्त में रहो यही अभ्यास चाहिए। चाहे अपनी कमज़ोरियों की हलचल हो, संस्कारों के व्यर्थ संकल्पों की हलचल हो, ऐसी हलचल के समय स्वयं को अचल बना सकते हो कि टाइम लग जाता है? टाइम लगना यह कभी भी धोखा दे सकता है। समाप्ति के समय में ज्यादा समय नहीं मिलना है। फाइनल रिज़ल्ट का पेपर कुछ सेकण्ड और मिनट का ही होना है लेकिन चारों ओर की हलचल के वातावरण में अचल रहने पर नम्बर मिलना है इसलिए यह रूहानी अनादि स्वीट साइलेन्स में रहने की एक्सरसाइज़ का अभ्यास खूब करो तो फाइनल पेपर बहुत सहज ही पास कर पास विद ऑनर हो जाएंगे। पहले से ही बता देते हैं कि यह पेपर आना है लेकिन नम्बर बहुत थोड़े समय में मिलना है। देह, देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार, व्यक्ति व वैभव, वायब्रेशन सब होते हुए भी अंत में आकर्षण न करें, इसी को कहते हैं, नष्टोमोहा समर्थ स्वरूप। लोग चिल्लाते रहें और आप अचल रहो। प्रकृति और माया भी सब लास्ट दाँवपेंच लगाने के लिए अपने तरफ कितना भी खींचें लेकिन आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। प्रकृति और माया में भी जितनी शक्ति होगी, वह ट्रायल करेगी। उनकी भी लास्ट ट्रायल और एक तरफ आप की लास्ट कर्मातीत स्थिति और दूसरी तरफ कर्मबंधन स्थिति होगी। दोनों तरफ की बहुत पॉवरफुल सीन होगी। वह भी फुल फोर्स से और यह भी फुल फोर्स से आमना-सामना होगा लेकिन सेकण्ड की विजय, विजय के नगाड़े बजाएगी।

कथा सरिता

अहंकार भी काम का

महाराणा प्रताप ने जंगलों में अपार कष्टों को झेलते हुए एक बार कमज़ोरी का अनुभव किया। वन में बच्चों के लिए बनाई गई घास की रोटी भी जब कोई जानवर उठा ले गया तो मानसिक रूप से वे टूट गए। उस समय उन्होंने स्वयं को बहुत दयनीय स्थिति में पाकर अकबर से संधि कर लेनी चाही। उनके एक भक्त- चारण को इस बात का पता चला तो उसने महाराणा को एक दोहा लिखकर भेजा। उसमें लिखा था कि- इस धरती पर हिन्दू कुलरक्षक एक आप ही थे, जो मुगल बादशाह से लोहा लेते रहे। किसी भी स्थिति में हार नहीं मानी, मस्तक गर्व से सदा ऊँचा रखा।

वह मस्तक अब अकबर के सामने झुकने जा रहा है, तो हम स्वाभिमानी मेवाड़ी किसकी शरण लें? आपका निर्णय हमें इसी तरह आश्चर्यचकित करता है, जैसे सूर्य को पूरब की बजाए पश्चिम में उगते देखने पर होता है। कहते हैं कि उस एक दोहे को पढ़कर महाराणा का स्वाभिमान पुनः जागृत हो गया।

संधि पत्र को फाड़कर फेंक दिया और अपनी शक्ति को फिर से संगठित कर मेवाड़ के शेष भाग को अकबर के अधिकार से मुक्त कराने के प्रयत्न में जुट गए। चारण को धन्यवाद देते हुए लिखकर भेजा कि सूरज जिस दिशा में उगता है, उसी दिशा में ही उगेगा, तुम चिंता मत करो। अहंकार को जगाना कभी-कभी व्यावहारिक जगत में बड़े काम का होता है। लोग किसी प्रसंग में कह देते हैं, इतने बड़े होकर जब आप ही ऐसा काम करेंगे तो किसी अन्य से क्या आशा की जाए! इस बात से आदमी संभल जाता है और कभी अवांछित कार्य नहीं करता।

मृत्यु का भय

एकनाथ के पास एक सेठ आए, बोले-आपका जीवन कितना शान्ति से भरा है। कोई उपाय बताइए, ताकि कभी भी हमें अशान्ति न प्राप्त हो। सदैव आनंद ही आनंद हो। एकनाथ बोले- पहले तो तू अपने आठ दिनों की चिंता कर। तू इतने दिन का ही मेहमान है। इस अवधि में अच्छा जीवन जी ले। उदास मन से वह लौटा तो, पर आते ही वह बदल-सा गया। अपने बुरे व्यवहार के लिए पहले पत्नी से, फिर बच्चों से, फिर मित्रों से क्षमा मांगी। अपने ग्राहकों से भी मिलता रहा। सबसे विनम्र भाव से क्षमा मांगता और प्रभु से निरंतर प्रार्थना करता कि अंत कष्टमय न हो। नौवें दिन वह एकनाथ के पास पहुँचा और पूछा-हे नाथ! आठ दिन तो बीत गए, अब अंतिम घड़ी कब आए? एकनाथ ने पूछा कि यह बता कि तेरे ये आठ दिन कैसे बीते? वह बोला- प्रभु! मुझे मृत्यु के अलावा कुछ भी नहीं दिख रहा था। मुझे मेरे सारे दुष्कर्म याद आए। पश्चाताप ही करता रहा। एकनाथ बोले- तो याद रख! इसी तरह सारी ज़िंदगी जी। हम भी सारा जीवन इसी सोच के साथ जीते हैं। यह देह क्षणभंगुर है। यह याद रखकर परमात्मा का स्मरण करते हुए काम कर। क्या हम भी यह संदेश याद रखकर जी सकते हैं?

माउंट आबू-पांडव भवन(राज.)। ज्ञान चर्चा व मुख्यालय पाण्डव भवन का अवलोकन करने के पश्चात् शान्ति स्तम्भ के सामने समूह चित्र में राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम,सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय,भारत सरकार के जावेद अहमद, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीनू दीदी, ब्र.कु. शशिकांत तथा अन्य अधिकारीगण।

चीन-गुआंगझौ। 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर चीन के गुआंगझौ स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा होटल शांग्री-ला में आयोजित भव्य स्वागत समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित ब्र.कु. सपना दीदी, महावाणिज्य दूत शंभू हक्कल, ग्वांगदोंग ... समिति के उपाध्यक्ष ... , ग्वांगझोउ विदेश कार्यालय की उप महानिदेशक ... तथा अन्य महावाणिज्य दूत और राजनयिक दल के सदस्यों व ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही।

वाराणसी-सारनाथ(उ.प्र.)। विख्यात कथावाचक स्वामी सुखदेवानंद जी महाराज को सेवाकेन्द्र आगमन पर आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए वाराणसी ज़ोन एवं पश्चिमी नेपाल की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी। साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र, ब्र.कु. तापोशी, आनंद पाण्डेय,विश्व हिन्दू परिषद तथा अन्य।

मोहाली-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित प्राणायाम कार्यक्रम के पश्चात् नाइपर डायरेक्टर प्रो. दुलाल पांडा को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी,मोहाली व रूपनगर सर्कल की प्रभारी। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. रमा दीदी,सह प्रभारी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

पटना-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के महेन्द्रू सेवाकेन्द्र व एन.सी.सी. बटालियन29 के तत्वावधान में आयोजित 'राजयोग मेडिटेशन प्रशिक्षण' सत्र के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. अमित भारीक, ब्र.कु. रंजीत रंजन,योगा इंस्ट्रक्टर, एन.सी.सी. 29 बिहार बी.एन. के कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल अमित कुमार, गर्ल्स कैडेट इंस्ट्रक्टर रिया राज तथा अन्य।

परबतसर-राज.। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 18वें पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर में उपस्थित रहे दादू पीठाधीश्वर श्री ओमप्रकाश दास जी महाराज, नगर पालिका अध्यक्ष ओमप्रकाश सेन, ब्र.कु. शानू, ब्र.कु. निधि, ब्र.कु. महेश तथा अन्य।

गया-एपी कॉलोनी(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित विशाल रक्तदान शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. प्रतिमा, मगध मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक के.के. सिन्हा, डॉ. अभय सिंहा, डॉ. रतन कुमार, डॉ. मानसी, समाजसेवी राजकुमार अग्रवाल तथा अन्य।

फैज़ाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 18वें स्मृति दिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शशि,अयोध्या तथा अन्य भाई-बहनें।

आप देखो इस दुनिया में जब हम पैदा हुए बड़े नैचुरल से थे और लोग हमको कहते भी थे, जैसे कोई हमारे घर में मेहमान आता है, छोटा बच्चा कहते हैं कि जैसे भगवान का अवतार हमारे घर में अवतरित हुआ है। और थोड़े दिन बाद जब हम थोड़े बड़े होते हैं तो हमारे जीवन में अड़चन शुरू हो जाती है। क्यों अड़चन शुरू हो जाती है? क्योंकि जैसे हमारे मन में आया कि लोग मुझे प्यार करें, लोग मुझे सम्मान दें, लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करें इसलिए आप उनके जैसा बनना शुरू कर देते हैं। उनकी शर्तों पर चलते हैं। और द्वंद्व में जीना शुरू हो जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि इस दुनिया में जिस आदमी ने थोड़ा भी औरों की तरह या किसी भी तरह से बनना चाहा, जैसे ही उसके अन्दर ये चाहना उत्पन्न हुई वहीं से आँखों से प्रकृति को देखते हो तो आँख से प्रकृति आपकी आँखों से ऊर्जा लेती है फिर आपको एक अच्छा फील कराती है। कुछ देना पड़ता है और इसका एक बहुत अच्छा पैरामीटर है भी है कि जब आप बाहर से आते हैं तो आप इतना थक क्यों जाते हैं, क्योंकि वहाँ हमने कुछ मूल्य चुकाया है। क्योंकि वहाँ भोगा, प्रकृति का सुख लिया, चाहे किसी भी चीज का सुख लिया लेकिन वहाँ से आने के बाद हम थका हुआ महसूस इसीलिए हो तो करते हैं, क्योंकि हमने कुछ मूल्य दिया और तब जाकर वहाँ से अच्छा फील हुआ। तो भोग का तो मूल्य होना ही है। इसीलिए कहा जाता है कि जैसे ही हम कुछ होना चाहते हैं, कुछ बनना चाहते हैं बाहरी दुनिया की तरह, तो वहीं से डर, भय, चिंता शुरू हो जाती है। परमात्मा कहते हैं कि तुम

- ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

है। क्योंकि वहाँ से सबकुछ शुरू हो जाता है जो हमने कभी सोचा भी नहीं होता है। इसीलिए हम सबको इस बात को समझना

परमात्मा को हम स्वीकार हैं...

भय शुरू हो जाता है। भय शुरू हो जाता है का अर्थ है कि हम सभी वैसे हैं नहीं ना! हैं तो हम कुछ और, लेकिन जब वैसा बनना शुरू करते हैं, वैसा चाहना शुरू कर देते हैं तो उसको बनाना भी तो पड़ेगा। इसीलिए इस दुनिया में कहा जाता है कि भोग का एक मूल्य होता है। कुछ भी हम भोगना भोगते हैं तो उसका एक मूल्य देना होता है। जैसे आप कभी भी किसी पार्क में जायेंगे, किसी अच्छे स्थान पर जायेंगे, किसी हिल स्टेशन पर जायेंगे वहाँ भी आपको एक मूल्य देना होता है, समय का मूल्य, आप वहाँ गये आपने अपनी जैसे हो वैसे मुझे स्वीकार हो। लेकिन वैसे स्वीकार होने के लिए भी तो कुछ शर्तें होंगी ना! तो परमात्मा की पहली शर्त है कि तुम जब इस दुनिया में आये जैसे आये थे वैसे फिर से बन जाओ। आत्मा हमारी शून्य अवस्था में, कम्प्लीट अवस्था में थी, शून्य का मतलब कम्प्लीट ना माइनस, ना प्लस। जिसमें ना कुछ ऊपर है, ना नीचे है, सबकुछ बैलेन्स है। तो जब हम शून्य होते हैं परमात्मा को स्वीकार होते हैं, ज़ीरो होते हैं। लेकिन जैसे ही औरों की शर्तों से अपने जीवन को बदलने की कोशिश करते हैं तो वहीं से ही अस्वीकार हो जाते बहुत ज़रूरी है कि परमात्मा कहते हैं कि तुम आत्मा बनकर जियो। तुम आत्मा थे, तुम आत्मा हो, और हमेशा तुम आत्मा रहोगे। लेकिन कुछ समय के लिए अपने रोल में नीचे आते हैं और रोल को निभाके ऊपर चले जाते हैं। तो इन सारी बातों को समझना, इन बातों को धारण करना, उसी आधार से रहना इसी को जीवन कहते हैं। और ये तब समझ आयेगा जब हम इसका अभ्यास करेंगे। और अभ्यास एक दिन का विषय नहीं है, रोज़ का विषय है। रोज़ हमको अपने जीवन में लाना होगा तब हम परमात्मा को स्वीकार हो जाएंगे।

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

मन की बातें

प्रश्न- एक प्रोग्राम में आपने बताया था कि योग के अभ्यास से कैंसर की बीमारी ठीक हुई थी वह भी केवल एक हफ्ते में, काफी अच्छा रिज़ल्ट था। मुझे भी है। मैं पिछले 4 महीने से ये अभ्यास कर रही हूं लेकिन वैसी प्रोग्रेस हमें नहीं मिल पाई है तो मन निराश रहता है। क्या करना चाहिए?

उत्तर- देखिए ये सबके कर्मों का खेल अलग-अलग है। मेडिकल साइंस तो इस बात को नहीं बताएगी किसी को कि कर्मों का भी खेल चल रहा है। वो तो वर्तमान का जो भी डायग्नोसिस है उसके आधार पर सब कुछ बताएंगे। तो आपको ये ऐसे करना चाहिए, कम से कम दो घण्टे इस बीमारी से मुक्त होने के लिए रोज़ योग अभ्यास करना चाहिए। दो संकल्प लेकर- मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूं और इस देह की मालिक हूं, स्वराज्य अधिकारी हूं। दो घण्टे बहुत अच्छा योग करेंगे और देख लें अपने को कि कोई निगेटिव संकल्प तो नहीं चलते? माताओं के संकल्प चलते कि मैं मर गई तो मेरे बच्चों का क्या होगा? मैं मर ना जाऊं, डर बहुत रहता है क्योंकि कैंसर से दुनिया का बुरा हाल होता जा रहा है। लेकिन हमारे अनुभवों में ये बहुत बातें आई हैं कि बहुतों के ठीक हो गए, लंबा समय वो जियेंगे, ये भी निश्चितता उनको मिल गई है। तो पानी चार्ज करके पीना, योगाभ्यास करना, जहाँ कैंसर हो वहाँ एनर्जी देना और रात को सोते समय ये 5-7 बार ये संकल्प करना है कि मेरा कैंसर बिल्कुल ठीक हो गया। एक है कि मैंने आपको बताया तो आप रिपीट करेंगे तो इफेक्ट नहीं होगा। लेकिन आत्म विश्वास से आप रिपीट करेंगे अपने मन में कि मेरा कैंसर बिल्कुल ठीक हो जाएगा, हो गया है और बहुत खुश रहेंगे। निगेटिव और निराश नहीं। ये ठीक होगा इस विश्वास के साथ करें।

प्रश्न- सुबह मेडिटेशन करने के बाद सारे दिन का शेड्यूल हमारा कैसा होना चाहिए? इस पर मार्गदर्शन करें।

उत्तर- ये बहुत अच्छा प्रश्न है। हम सुबह तो मेडिटेशन करते ही हैं और अवश्य करना चाहिए। लेकिन सारे दिन के लिए भी कुछ अभ्यास हमें तय कर लेने चाहिए अपने मन में। ये हम आज सारा दिन ये अभ्यास करेंगे। चाहे आप एक, दो या तीन ही अभ्यास ले जाएं। चाहे आप कई अभ्यास साथ में ले जाएं कि इस कर्म में हम ये करेंगे, ऑफिस में ये करेंगे, दुकान में ये करेंगे। तो सारा दिन अच्छा अभ्यास भी हो और हल्के बहुत रहें। कुछ बाबा ने ऐसी चीज़ें सिखाई हैं जिनको हमें सारे दिन की दिनचर्या में साथ रखना चाहिए। जैसे बापदादा का आह्वान, ये याद रखना कि वो मेरे लिए ज़िम्मेदार हैं, वो मेरा साथी है या वो करन-करावनहार है... ऐसी एक-दो बातें याद रखना। तो मदद मिलती रहेगी, मन बहुत हल्का रहेगा। लक्ष्य ये हो कि हमें अपने चार्यों को, जो भी हम सारा दिन करते हैं उसको हमें एन्जॉय करना है और लाइफ को बहुत सरल बनाना है। तो ये कुछ अभ्यास भी सारा दिन करेंगे। बहुत अच्छा होगा अगर आप कर सकें दिन में तीन बार, ईश्वरीय महावाक्य देख लिया करें कुछ दो मिनट में। नोट करके रखें अपने पास। पॉकिट में भी रख सकते हैं, पर्स में भी रख सकते हैं। दो-तीन बार पढ़ लें। उससे क्या होगा कि फिर से जागृति आएगी और जो व्यर्थ कहीं भी चल रहा हो वो समाप्त हो जाएगा।

अपने समय के अनुसार जितना मुरली पढ़ना हो, योग करना हो कर सकते हैं। मुरली- ईश्वरीय खज़ानों की खान है, रत्नों की खान है। आँखें खुलती हैं मनुष्य की, जीवन जीने की राह मिलती है इससे, मन के बोझ समाप्त होते हैं, विचारों में महानता आती है, चित्त की शुद्धि होती है। ये तो अनमोल चीज़ें हैं। इन्हें तो जितना करेंगे उतना ही अच्छा होगा। लेकिन शाम का मेडिटेशन बहुतों का अनुभव है कि सवेरे से भी ज़्यादा पॉवरफुल होता है। और सोने से पहले आधा घण्टा अवश्य करना चाहिए। जो हम दूसरों चीज़ सिखाते हैं। हमारे ही पांच स्वरूपों का अभ्यास और मेडिटेशन भी जितना करेंगे, प्रभु मिलन करते हुए विश्रामी होंगे तो नींद सतोप्रधान होगी और सवेरे का समय बहुत एनर्जेटिक, सुखदाई और आनन्दकारी बितेगा।

प्रश्न- मैं रोज़ आपका समाधान प्रोग्राम देखती हूं, राजयोग करने पर मेरी कोई भी प्रॉब्लम ठीक नहीं हुई अभी तक। तो इसके लिए क्या करें?

उत्तर- राजयोग के साथ कुछ और चीज़ें भी करनी चाहिए। राजयोग को हम विघ्न विनाशक भट्ठी कहते हैं, वो कराते हैं। कोई सफलतामूर्त, भिन्न-भिन्न संकल्पों से करते हैं लेकिन इसमें देखने की बात ये होगी कि ये इन्हें खुद चेक करना है कि योगाभ्यास में मन एकाग्र कितना होता है। कई लोग सोचते हैं शान्त में बैठे हैं, लाल लाइट में योग हो रहा है, ये नहीं। शिवबाबा से कनेक्ट कितने होते हैं, व्यर्थ से मुक्त कितने ज़्यादा रहते हैं। अब मान लो कोई बीमार है, तो वो सोचे योग से ही ठीक हो जाएगा, ये गलत है। मेडिसिन भी उसको लेनी चाहिए, ट्रीटमेंट भी उसे लेनी चाहिए, मन को हल्का भी रखना चाहिए, अपने को प्रसन्न भी रखना चाहिए। अब बहुत सारी बातें एक साथ काउंट होती हैं। वो तो इनको बताना होगा कि कहाँ कमी रहती है लेकिन अगर बहुत अच्छा एकाग्रता के साथ योगाभ्यास किया जाए, तो हम तो सब देख रहे हैं कि बहुतों का ठीक हो रहा है। लेकिन जिनका नहीं हो रहा है वहाँ ये भी हो सकता है कि मनुष्य की जो कर्मों की गति है, उसका जो चिन्तन रहा है पूरा जीवन, अभी उसका चिन्तन निगेटिव है क्या, वो बहुत चिन्ताओं में रहते हैं, उनके घर में लड़ाई-झगड़ा है, पति की ओर से सदा इनसल्ट की गई है, इन चीज़ों का बुरा इफेक्ट सब-कॉन्शियस माइंड में समा जाता है। वो फिर बैड एनर्जी मनुष्य को ठीक होने नहीं देती है। तो एक साथ बहुत सारे परिवर्तन करने पड़ेंगे। दवाइयों के साथ, योगाभ्यास के साथ चिन्तन का परिवर्तन।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

हे! प्रिय वत्सों - अब दिव्यता का आह्वान करो

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई,माउंट आबू

करो उस समय को जब ये घड़ियां बीत जाएंगी... भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जाएगा... कोई विजयी रत्न बन जाएंगे और कोई अष्ट रत्न... कोई आत्मा सर्व रसों से स्वयं को भर लेंगे, किसी की तिजोरियां सब खज़ानों से भर जाएंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जाएंगे कि ओह... हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया। हम तेरे-मेरे की माला में ही उलझे रहे... हमने मान-शान के पीछे ही जीवन लगा दिया... हम न सुख दे सके, न सुख ले सके। परन्तु तब समय बीत चुका होगा और हम तब अपने को उन मनुष्यों से अच्छा नहीं समझेंगे जिन्होंने इस धरा पर आये हुए प्रभु को नहीं पहचाना।

तो हे जग को सुगन्धित करने वाले चेतन पुष्पों,

याद करो उस समय को जब ये घड़ियां बीत जाएंगी...भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जाएगा... कोई विजयी रत्न बन जाएंगे और कोई अष्ट रत्न... कोई आत्मा सर्व रसों से स्वयं को भर लेंगे, किसी की तिजोरियां सब खज़ानों से भर जाएंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जाएंगे कि ओह... हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया...!!!

इन कोमल कलियों का बलिदान देखकर किसका मन प्रेरणा व उत्साह से नहीं भरेगा। जो फूल अभी खिले भी नहीं है, जिनमें अभी सुगन्ध भरनी बाकी है, वे चले है इस विरान में पुष्प उगाने, वे चले हैं इस दुर्गन्ध भरी वसुन्धरा पर पवित्रता की सरिता बहाने... क्यों न गौरव होगा, उनके जन्म देने वालों को भी और क्यों न गर्व होगा उसको भी, जिनका इशारा मिलते ही इन्होंने ये बलिदानी कदम उठाया। ये कलियां महकते पुष्प बन जाएं, ये कलियां विश्व की प्रेरक बन जाएं, ये कलियां निर्बलों व निर्धनों का सहारा बन जाएं... इनको बस ऐसी ही शुभ-भावनाओं की आवश्यकता है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में हज़ारों आत्माएं अपने जीवन रूपी पुष्प को शिव पर अर्पित कर चुकी हैं। ये महान विभूतियां कलियुग में रहते हुए भी कलियुग से बहुत दूर निकल आई हैं और पुनः लौटने का किसी का कोई भी इरादा नहीं है। तो क्यों न इस जीवन को दिव्यता से भर दें ताकि संसार हममें ही प्रभु का दर्शन कर सके। तो हमें अन्तर्मुखी होकर देखना है कि ये ईश्वरीय मौजों का काल कैसे बीत रहा है। कहीं ये अनमोल घड़ियां यूं ही तो नहीं बीत रही... कहीं ये वरदानी समय संघर्षों में ही तो नहीं बीत रहा... कहीं ये अविनाशी कमाई की घड़ियां हमारे हाथ से खाली ही तो नहीं जा रही... ऐसा तो नहीं कि कहीं हमें एहसास भी न हो और ये सुनहरा काल यूं ही बीत जाए।

मनुष्य की सबसे प्यारी वस्तु ये जीवन है

मनुष्य को सबसे प्यारी वस्तु ये जीवन है, जबकि इसे हो सेवाओं के लिए स्वाहा कर दिया, फिर भला इस जीवन को दिव्य बनाने के लिए हम एक बार दिल से मेहनत क्यों न करें! जबकि भगवान ने हमारा सभी बोझ भी हर लिया, हमें अपनी छत्रछाया में ले लिया, अपने प्यार में समा लिया और अपना उत्तराधिकारी बना लिया तो देरी किस बात की! तो आओ हम सभी मिलकर संकल्प करें कि जब तक अपने लक्ष्य को नहीं पा लेंगे, तब तक तपस्वी जीवन व्यतीत करेंगे, वैभवों से दूर रहेंगे और मुड़कर कभी भी पीछे नहीं देखेंगे। जीवन का बलिदान करने वालों, ज़रा याद करो उस अतीत को जब तुमने अपनी इस अमूल्य निधि-'जीवन' को ईश्वर को बलिदान करने का संकल्प किया था। क्या-क्या उमंगें थीं तुम्हारे दिल में? क्या कुछ करने के साहस के साथ कदम आगे बढ़ाए थे? जीवन के किस लक्ष्य को पाने के लिए निःसंकोच होकर और विघ्नों को लात मारकर यह कुर्बानी की थी?

योगयुक्त होकर विचार करें-

योगयुक्त होकर विचार करो कि जिस पर तुमने स्वयं को बलिदान किया है, उसने प्रत्यक्ष रूप में तुम्हें क्या दिया है? उसने अपनी असीम शक्तियों को तुमसे जोड़ दिया है... उसने तुम्हें अपनी शीतल छाया में विश्राम दिया है, तुम्हें अपने नयनों का नूर बना लिया है... तुम पर उसकी नज़र है और तुम्हें मालूम है कि वह तुमसे क्या चाहता है?

उसकी तुमसे श्रेष्ठ कामना है कि-

- ये मेरे चेतन चिराग जग को रोशन करें।
- ये मेरे नयनों के नूर जग के नूर बनें।
- मेरे ये पावन वत्स इस धरा पर उसी तरह चमकें जैसे नभ में सूर्य और चंद्रमा चमकते हैं।
- मेरी इन बलिदानी भुजाओं में तेज हो, दिव्यता हो, प्रकाश हो ताकि मेरे भक्त मेरी छवि इस धरा पर देख सकें।
- मेरे ये लाल, रूहों के सहारे बनें, मानव की डगमगाती कश्ती के किनारे बनें। मेरे ये वत्स विश्व की अमूल्य निधि बनें।
- मेरे ये वत्स जग की शोभा बनें, रोतों के लिए मुस्कान बनें, चिंताओं के लिए चिंगारी बनें, अबलाओं की शक्ति बनें और इस वीरान विश्व में हरियाली लायें।
- मेरे ये वत्स अति शक्तिशाली, अचल-अडोल बनें, विघ्नों को ललकारने वाले बनें और माया के साम्राज्य को समाप्त कर दें।

अपने साहस और आत्म विश्वास को भूलो नहीं

अपने साहस और आत्म विश्वासों को भूलो नहीं। तुम्हारा ये साहस तुम्हारा सहायक बनेगा। समस्याएं और विघ्न तुम्हारे साहस व आत्मविश्वास को समाप्त न करें। जहाँ साहस व आत्मविश्वास है, वहाँ कठिनाई व समस्याएं स्वतः ही आत्म समर्पण कर देती है। याद बाबा की कामनाओं को पूर्ण करो... सबके प्रेरक बन जाओ... जो लोग तुममें विश्वास नहीं करते, उन्हें भी अपने दिव्य विवेक का चमत्कार दिखाओ। जो तुम्हें रूखी दृष्टि देते है, उन्हें तुम सुख भरी दृष्टि के महत्व का आभास कराओ। जो तुम्हें कमजोर समझते है, जो तुममें संशय करते है, उन्हें तुम सफलता की चैतन्य प्रतिमा बनकर दिखाओ। तुम अपने कदम इतनी तेजी से आगे बढ़ाओ कि वर्षों से चलने वाले यात्री पीछे रह जायें और उन्हें भी तीव्रगति से बढ़ने का उमंग प्राप्त हो।

मनाली-हि.प्र.। माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट में 'द आर्ट ऑफ पॉजिटिव थिंकिंग' कार्यक्रम के पश्चात् डायरेक्टर अविनाश नेगी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण,पानीपत। साथ हैं ब्र.कु. मोना, ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. सोनिका,पानीपत तथा अन्य।

आरिया-बिहार। एसएसबी कैंप में एसएसबी बटालियन 52 के जवानों के लिए 'कर्म, योग एवं सुशासन के लिए मेडिटेशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए प्रवक्ता ब्र.कु. शेफाली। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज प्रशासक प्रभाग के कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. हरीश, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. सोनाली, एसएसबी बटालियन 52 के कमांडेंट अधिकारी महेन्द्र प्रताप सिंह, बैंक कर्मचारी संजय गुप्ता तथा अन्य अतिथियों की उपस्थिति रही।

अव्यक्त मुरली 31-12-2002 (पहेली-24)2024 -25

ऊपर से नीचे

1. ..... का अर्थ ही है जैसे ब्रह्मा बाप ने जो कहा वह किया है, जो सोचा वह तुरंत दान महापुण्य समान किया।(4)
2. बापदादा यही चाहते हैं कि जहाँ से आदि हुई, वहाँ ही प्रत्यक्षता होनी है। ..... आता है ना! ब्रह्मा बाप के देश के वासी हो तो देश वासियों से प्यार होता है।(3)
3. अगर ..... सफल करेंगे तो भविष्य में भी आधाकल्प का पूरा ..... राज्य अधिकारी बनेंगे।(3)
4. जैसे ब्रह्मा बाप ने जो कहा वह किया है, जो सोचा वह तुरंत दान महापुण्य समान किया। ऐसे ही महावीर ग्रुप का यह ..... है ना!(2)
5. बापदादा ने देखा है, कोई-कोई स्थान में हिम्मत कम दिलाने की ..... है। हिम्मत दिलाओ, हर कार्य में मन्सा में भी, वाचा में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, कर्म में भी हिम्मत दिलाओ।(2)
8. जो भी आये चाहे सम्बन्ध में आये, चाहे सम्पर्क में आये लेकिन उनको कोई न कोई गुण या शक्ति की ..... दे देना।(2)
10. चारों ओर के बहुत मीठे, बहुत प्यारे बच्चों को पदम-पदम गुणा न्यू ईयर की मुबारक हो। यह जो घड़ी बीत गई, यह है ..... और बधाई की घड़ी।(3)
11. ..... के खज़ाने को भी सफल करो तो ..... का अर्थ है समझ, वहां इतने समझदार बन जायेंगे जो कोई मंत्रियों की ज़रूरत नहीं है।(2)
13. ऐसा प्लैन बनाओ जो कोई ने नहीं किया हो, वर्ग तो बहुत बने हुए है ना! तो आपका वर्ग सबसे ..... ले लेवे।(5)
14. आपके सिर पर भी ताज होगा और आपका पूरा अधिकार होगा। तो क्या करेंगे? नम्बरवन या नम्बरवार, क्या बनेंगे?(2)
15. जैसे दादियों के लिए कहते हो एक हैं, ऐसे आप दीदियां, दादे सब एकमत। इसका स्लोगन है-अभी-अभी ..... बनो, अभी-अभी मालिक बनो।(3)
16. बापदादा सदा कहते हैं कि यह महारथी जिस भी सेन्टर पर होंगे ना वह सेन्टर सदा फलीभूत होगा। चाहे कमाई नहीं लेकिन दिल बड़ी होती है, ... बड़ी होती है।(3)
17. एक दिन आयेगा, बहुत जल्दी आयेगा जो सब कहेंगे कि हम सभी स्व-परिवर्तन करने वाले शक्ति, पाण्डव ..... हैं।(2)
18. पिता का पिता, पितामह।(2)
21. सब तिलकधारी बनकर आये हैं, जिन्होंने विशेष रिफ्रेशमेंट की है वह तिलक धारी खड़े रहो। अच्छी निशानी लगाई है। आशा ..... गई है ना?(3)
23. हवा, पवन, अनिल(2)

बायें से दायें

1. बापदादा कहते हैं मुख मीठा तो कराना ही है लेकिन अपना मीठा मुखड़ा भी दिखाना है। सिर्फ मुख मीठा नहीं, मुखड़ा भी मीठा। इसमें ..... जमा है ना! (4)
3. स्वांस ..... कर रहे हो तो 21 जन्म ही स्वस्थ रहेंगे। चलते-चलते किसकी हार्ट रूक जाती, किसकी नाड़ियां बन्द हो जाती, वह नहीं होगी।(3)
6. बापदादा कहते हैं कि हर एक बच्चा आगे-आगे ..... से मुबारक और दिल की दुआयें स्वीकार करें।(2)
7. यह ..... को जितना बार करेंगे उतना ही सहज योगी, सफल योगी बनेंगे।(2)
9. सूरज, दिवाकर, भास्कर(2)
12. आपके पास गुणों का खज़ाना कितना बड़ा है, शक्तियों का दान करने वाले मास्टर ..... बनो।(2)
13. अभी इस वर्ष ..... क्या करेंगे? अभी बापदादा ने जो काम दिया है, वह किया नहीं है।(4)
16. परमात्म मिलन की मौज़ सारे कल्प में संगमयुग पर मिलती है। हर दिन उत्सव है क्योंकि उमंग-उत्साह है कि अपने सर्व ..... बहिनों को परमात्मा पिता का बनायें।(2)
17. बापदादा सदा कहते हैं कि यह महारथी जिस भी ..... पर होंगे ना वह ..... सदा फलीभूत होगा।(3)
19. बापदादा तो ..... करते रहते हैं ना! तो मुश्किल योगी कौन-कौन बनता है! सहज योगी का यह मतलब नहीं है कि अलबेलेपन का पुरुषार्थ हो। श्रेष्ठ भी हो और सहज भी हो।(2)
20. ..... गाना तो सभी को आता है, बाप के गुणों का गीत गाना भी आता है और खुशी में ..... भी आता है।
22. सफलता का अधिकार आप ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए और किसका अधिकार हो सकता है! क्योंकि बाप ने आपको सफलता भव का ..... दिया है।(4)
24. ऐसे प्लैन बनाओ जो सांप मरे और लाठी भी नहीं टूटे। प्रत्यक्षता हो, धमाल नहीं हो, ... हो।(3)
25. वास्तव में ..... का एक-एक संकल्प, एक-एक सेकण्ड सफल करना ही सफलता मूर्त बनाता है।(5)

23/24- पहेली का उत्तर
(अव्यक्त मुरली 15-12-2002)

ऊपर से नीचे: 1.लवलीन, 2.वचन, 3.सेकण्ड, 4.मोहब्बत, 5.रात, 9.नेचर, 10.भावना, 11.भगवान, 13.परमात्मा, 14.वारिस, 16.मधुबन, 19.माइक, 21.साथ। बायें से दायें: 1.लगाव, 3.सेवा, 6.चमक, 7.मेहनत, 8.नशे, 10.भारत, 12.योग, 13.परिवार, 15.नाम, 17.दिन, 18.समान, 20.बच्चे, 22.कुम्भकरण, 23.अथक।

देहरादून-उत्तराखंड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर उनके शुभ जन्मदिवस की बधाई देते हुए ब्रह्माकुमारीज़ सबज़ोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. मन्जू दीदी,देहरादून, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. रजनी, ब्र.कु. प्रियंका तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

ब्यावर-राज.। सम्राट पृथ्वीराज चौहान के जन्मोत्सव कार्यक्रम में राजस्थान की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गंगा व ब्र.कु. विमला।

लखनऊ-उ.प्र.। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ के 23वें दीक्षांत समारोह में भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला, जो भारत के अंतरिक्ष मिशन 'गगनयान' से जुड़े हैं, को विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधि प्रदान की गई। तत्पश्चात् उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. सोनी, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर प्रोफेसर डॉ. जय प्रकाश पाण्डे तथा अन्य।

आगरा-शाहगंज(उ.प्र.)। पुलिस कमिश्नर आई.पी.एस. दीपक कुमार को ईश्वरीय सौगात भेट करते हुए ब्र.कु. दर्शन बहना। साथ है ब्र.कु. ममता तथा अन्य पुलिस अधिकारीगण।

जमशेदपुर-झारखंड। यूनिवर्सल पीस पैलेस रिट्रीट सेंटर के प्रांगण में आयोजित 'श्रेष्ठ समाज के निर्माण में मीडिया की भूमिका' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. अंजू,कोल्हान क्षेत्र, ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. रागिनी, ब्र.कु. सुकन्या, ब्र.कु. संजू, ब्र.कु. कोमल भाई,मुख्य संपादक मधुबन न्यूज व शिव आमंत्रण समाचार पत्र, संजीव भारद्वाज,प्रेस क्लब के प्रेसिडेंट, बृजभूषण सिंह,चमकता आईना के संपादक, दैनिक भास्कर के संपादक झा जी तथा अन्य।

यहाँ न तो कोई हॉस्पिटल, न ही कोई ओपीडी

अनुभव

फिर भी होती हार्ट की सर्जरी...

भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा वीरता के लिए पदक से सम्मानित 61 वर्षीय उ.प्र. पुलिस में सेवारत प्रेमवीर राणा की सोच थी कि उन्हें कोई भी बीमारी नहीं होगी।

वीरता पदक से सम्मानित प्रेमवीर राणा,उ.प्र.

> **मानव के शरीर का ऐसा ऑर्गन जो जन्म से मृत्यु तक बिना रुके, बिना थके जीवन देता है। लेकिन हमने कभी भी हृदय के बारे में नहीं सोचा कि उसकी ज़रूरतें क्या हैं, उसकी धड़कनें कैसे चलती हैं! हम तो भागदौड़ वाली ज़िन्दगी में उसकी सही रूप से देखभाल भी नहीं कर पाते, न ही उसके बारे में सोचते कि आखिर प्रभु प्रदत्त बेशकीमती उपहार को हम यूं ही उसका महत्व न समझ गंवा बैठते हैं।**

मैं सोचता था कि कोई बीमारी नहीं आएगी, अगर मैं सत्य पथ पर काम करता रहा तो, ये मेरा दृढ़ विश्वास था। हालांकि मुझे पुलिस में काम करते-करते दो बार गोली लगी। एक तो साम्प्रदायिक दंगे में रामपुर मनिहारान,उत्तरप्रदेश में गोली लगी। जिसके कारण 11 महीने बेड पर रहा। दूसरी बार 1992 में आतंकवादियों ने गोली मारी जिससे 17 महीने सवाई माधोपुर,जयपुर के अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती रहा। मैं सोचता था कि मैं इतना ओपन हार्ट वाला आदमी हूँ तो शायद मेरा ओपन हार्ट कभी ना खुले। समय के कालचक्र में देखो क्या हुआ कि मैंने जो सोचा भी नहीं था वो ही हार्ट की बीमारी हो गई। मैंने अपने बच्चों, पत्नी और एक-दोस्त के अलावा ये बीमारी की बात किसी को भी नहीं बताई। यहाँ तक कि डिपार्टमेंट को भी नहीं बताया कि 22 मई 2024 को मैं हार्ट का पेशेन्ट हो गया।

मैंने अपने नज़दीकी डॉक्टर को बताया तो उन्होंने कहा कि तुम्हें हो ही नहीं सकती हार्ट की बीमारी। मैंने एम.आर.आई. करवाई, एंजियोग्राफी करवाई। ज़्यादा टाइम नहीं हुआ ये कराते-कराते फिर मैंने पूछा कि मैं अपने दिल का आदमी खुद का हूँ, ओपन हार्ट नहीं कराना। लेकिन सभी ने कहा 'पास करवा लो, स्टंट डलवा लो। एक एम.एस. वाले डॉक्टर हैं ग्रेटर कैलाश में। पता लगा कि वहाँ कराएंगे तो वहाँ दवाई से खुलवा देंगे। मैंने देखा कि उस अस्पताल में दुनिया भर के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, राष्ट्रपति सभी के फोटो वहाँ लगे हुए थे। एक साल तक इलाज करवाया और देखो, दुर्भाग्य मेरा यहाँ से कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ा हुआ हूँ, कई प्रोग्राम में आया, कुनाया गया पर मुझे विश्वास नहीं था। किसी ने बताया कि यहाँ संस्थान में कैड का प्रोग्राम होता है। हमने सोचा ऐसे ही होगा खाना खिलाएंगे और कहेंगे अच्छा करो, बुरा न करो, ये सब चीज़ें बताएंगे। एक बार डॉ. सतीश गुप्ता से मेरे भाई सुशील मिलने आये। उन्होंने मेरी सितम्बर 2024 में डॉ. सतीश गुप्ता से बात भी करवाई, फिर भी विश्वास नहीं हुआ।

अभी इसी साल 11 मई 2025 को ही सावन के पहले दिन में ही मेरे को हार्ट अटैक आ गया और चोट भी लगी। फिर सबने मेरी पत्नी, बच्चे और सभी मित्र-सम्बन्धियों ने कहा कि तुम्हें मरना तो है ही अगर तुम स्टंट नहीं डलवाओगे। तब मेरे दिमाग में आया कि क्यों न एक बार डॉक्टर को दिखा लूं और ओपन हार्ट नहीं कराना। तब मर से शान्तिवन में आयोजित कैड प्रोग्राम के लिए दिनांक 13 को चला और 14 को पहुंच गया। आने में दो घण्टा देरी हो गया। और आते ही यहाँ पूछा कि डॉ. साहब ओपीडी में कब मिलेंगे। उत्तर मिला कैड के क्लास में मिलेंगे। मैंने पूछा ओपीडी में किस समय बैठते हैं? परंतु आश्चर्य की बात यह देखी कि यहाँ तो ना कोई अस्पताल और ना कोई ओ.पी.डी.। पर ज़्यादा क्या बताऊं यहाँ आते ही इस आध्यात्मिक हॉस्पिटल को देखा। आध्यात्मिक और साइंस का ये बेहतर सुंदर संगम है जो मैंने यहाँ देखा।

चमत्कार है डॉ. सतीश गुप्ता का और उनके चलाए गए इस कैड प्रोग्राम का। ऐसा हॉस्पिटल जो आध्यात्मिक है और डॉ. सतीश गुप्ता का जिन्होंने अपनी आत्मा पर अधिकार कर लिया हो और परमात्मा शिव से सीधा जुड़ गये हों। यहाँ का पूरा ही सिस्टम जोकि कैड प्रोग्राम में आये हुए हार्ट पेशेन्ट को प्रशिक्षित करते हैं। इस कैड प्रोग्राम में मैं भी जुड़ गया। मैं अपने को बहुत धन्य अनुभव कर रहा हूँ। मैंने ये कैड प्रोग्राम पूरा अटेंड किया और मैं बिल्कुल ही अपने आप को तरोताज़ा महसूस कर रहा हूँ। मेरी धमनियों में जो रुकावटें थीं जिससे मुझे चलने-फिरने में तकलीफ होती थी वो नॉर्मल हो गई। फिर से मैंने डॉक्टर से जाँच करवाई तो सब रिपोर्ट नॉर्मल आई। यहाँ शरीर और आत्मा के बीच का जो रिश्ता और सूक्ष्म संवेदनाएं कैसे काम करती है उसके बारे में सही-सही और साईंटिफिक तरीकों से बताया गया। साथ ही नमकयुक्त भोजन तथा दिनचर्या में अपनी सकारात्मक सोच के बारे में गहराई से जाना व समझा। मैं ओपन हार्ट का हूँ परन्तु हार्ट कैसे काम करता है उसकी क्या रिक्वायरमेंट है, कैसे नरिशमेंट होता है ये मैंने जाना। अब मैं अपने आपको स्वस्थ समझ रहा हूँ। यहाँ के सभी भाई-बहनों को मैं अपने दिल की गहराई से धन्यवाद करता हूँ।

गुरुग्राम-ओ.आर.सी.(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं इंडियन योगिनी एसोसिएशन के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज़ के ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर में 'विकसित भारत के लिए महिला सशक्तिकरण एवं पर्यावरण' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए, ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राज्यसभा सांसद रेखा शर्मा तथा अन्य इंडियन योगिनी एसोसिएशन के पदाधिकारीगण।

अंबाला शहर-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के सुप्रीम लाइट हाउस में विराट संत सम्मेलन के तहत 'अध्यात्म द्वारा सनातन संस्कृति की स्थापना' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. लक्ष्मी, धार्मिक प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी ब्र.कु. रामनाथ, आचार्य महामंडलेश्वर कमल किशोर, सरदार ज्ञानी शेर सिंह एवं आचार्य स्वामी राजेश्वरानंद महाराज।

गुमला-झारखंड। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जिला कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् जिलाधिकारी प्रेरणा दीक्षित को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शान्ति। साथ है ब्र.कु. ममता एवं ब्र.कु. सुचिता।

सुंदरनगर-हि.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्यांग समानता एवं सशक्तिकरण अभियान थीम के तहत 21 दिवसीय अभियान के अंतर्गत भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिखा, अभियान के प्रभारी ब्र.कु. सूर्यप्रकाश, महेश शर्मा,चेयरमैन सारथा स्पेशल स्कूल, प्रधानाचार्या नीलम लखनपाल,एचपीआईसीएसए स्कूल, दिव्यांगों की राजकीय आईटीआई प्रधानाचार्य आदित्य तथा अन्य।

आज ज़िम्मेदारी लेने की कोई बात ही नहीं कर रहा

राजयोगी ब्र.कु. जगदीश चंद्र हसीजा

हम कोई ऐसी ज़िम्मेदारी लेने की बात नहीं कर रहे हैं जिसमें कुछ पैसा खर्च होता हो, कुछ समय लगाना पड़ता हो, शरीर से कुछ अधिक काम करने की ज़रूरत हो या हमारी पहले की ज़िम्मेदारियों में कोई ऐसी ज़िम्मेदारी जुड़ जाए कि हम इस ज़िम्मेदारी के बोझ को उठाने में असमर्थ हों। ज़िम्मेदारी तो हरेक व्यक्ति लेता है और मनुष्य ने कई व्यर्थ ज़िम्मेदारियाँ भी ले रखी हैं। हम तो ऐसी ज़िम्मेदारी बता रहे हैं जिससे हमें झंझटों से छुटकारा मिल जाए, मन को राहत महसूस हो और शरीर में भी हल्कापन आ जाए।

पुरुषार्थ क्या है? पुरुषार्थ यह है कि हर कोई स्वयं अपनी ज़िम्मेदारी ले-ले। दूसरे की ज़िम्मेदारी लेना तो कठिन होता है परन्तु अपनी ज़िम्मेदारी तो ली ही जा सकती है क्योंकि इसका लाभ हमें ही होने वाला है। अगर हम अपनी ज़िम्मेदारी लेने में भी स्वयं को असमर्थ अनुभव करते हैं तो सामर्थ्य भी हमें मिल सकती है।

अगर और कुछ नहीं कर सकते तो हम ज़िम्मेदारी लेने का इरादा तो करें। हम कोई ऐसी ज़िम्मेदारी लेने की बात नहीं कर रहे हैं जिसमें कुछ पैसा खर्च होता हो, कुछ समय लगाना पड़ता हो, शरीर से कुछ अधिक काम करने की ज़रूरत हो या हमारी पहले की ज़िम्मेदारियों में कोई ऐसी ज़िम्मेदारी जुड़ जाए कि हम इस ज़िम्मेदारी के बोझ को उठाने में असमर्थ हों। ज़िम्मेदारी तो हरेक व्यक्ति लेता है और मनुष्य ने कई व्यर्थ ज़िम्मेदारियाँ भी ले रखी हैं। हम तो ऐसी ज़िम्मेदारी बता रहे हैं जिससे हमें झंझटों से छुटकारा मिल जाए, मन को राहत महसूस हो और शरीर में भी हल्कापन आ जाए।

ज़िम्मेदारी केवल यह है कि हम स्वयं को विधायक समझें

वह ज़िम्मेदारी यह है कि हममें से हरेक स्वयं को विधायक समझें, अर्थात् हरेक व्यक्ति अपनी बुद्धि में इस विचार को दृढ़ रख कर कर्म करे कि उसका कर्म ऐसा श्रेष्ठ हो कि वह नियम, मर्यादा या कानून के समान हो। तब हरेक व्यक्ति स्वयं को विधायक समझेगा और विधि-पूर्वक तथा नियम-पूर्वक कार्य करेगा।

हम कोई ऐसा विधायक बनने के लिए नहीं कह रहे हैं जिसके लिए चुनाव लड़ने की ज़रूरत हो और जो विधान सभा भंग होने पर छूट जाए। यह तो पोस्टरबाज़ी, नारेबाज़ी, भाषणबाज़ी आदि के चक्कर में पड़ने के बिना ही विधायक बनने की बात है। विधान सभा वाले कई विधायक तो स्वयं भी कानून तोड़ देते हैं परन्तु हम तो जीवन को ऐसा विधिपूर्वक बनाने की बात कह रहे हैं कि आपका हर कर्म लोगों के सामने पालनीय अथवा अनुकरणीय विधान या आदर्श हो। यहाँ तो इस ज़िम्मेदारी को लेने की बात हो रही है कि हम चारित्रिक नियमों, आध्यात्मिक नियमों का सदा पालन करेंगे और हमारा जीवन ही विधान की खुली किताब होगा। जिसका जीवन और कार्य-व्यवहार विधि और विधान पूर्वक हो वही तो वास्तव में 'ज्ञानी' और 'योगी' है। 'ज्ञानी' कहते ही उसको हैं कि जो कर्मों और आचरण को दैवी गुणों से युक्त करना जानता हो और 'योगी' की परिभाषा ही यह है कि वह 'युक्ति-युक्त' रीति से हरेक कार्य करता हो।

विधाता का परिचय और उसकी स्मृति

परन्तु इस प्रकार विधि और विधान के अनुरूप कार्य करने और स्वयं को विधायक समझने के लिए ज़रूरी है कि हम 'विधाता' को जानें और कर्म करते समय उसका बताया हुआ विधान हमारी स्मृति में रहे। परमात्मा को 'विधाता' कहा ही इसलिए जाता है कि वह कर्मों का विधान बता कर और उसके अनुरूप जीवन बनाने की विधि समझा कर हमारे भाग्य का विधाता बनता है। तो परमात्मा को 'भाग्य-विधाता' तो कहते हैं परन्तु वे ये नहीं जानते कि परमात्मा विधि-विधान बता कर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं और उससे ही हमारा भाग्य बनता है।

हमें ये मालूम होना चाहिए कि परमात्मा अथवा विधाता के जो गुण हैं, वे ही श्रेष्ठ विधान की नींव है। परमात्मा के गुणों का वर्णन करते हुए प्रायः कहा जाता है कि वह पवित्रता, शान्ति, प्रेम, न्याय, सद्भावना, करुणा, सत्यता, दिव्यता और सद्गुणों का भंडार है। इन्हीं गुणों से वह नये समाज का निर्माण करता है। इन्हीं के द्वारा ही वह मनुष्य का भाग्य बनाता है। यही उसके विधान की बुनियाद है। यदि हम कर्म करते समय विधाता को सामने रखेंगे तो उसके ये गुण हमारी स्मृति में रहेंगे और इन द्वारा ही हम विधायक बन सकेंगे अर्थात् ऐसे कर्म कर सकेंगे जो विधि और विधान के अनुसार हों।

मोकामा-बिहार। दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में उपस्थित हैं ब्र.कु. निशा, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी रवि कुमार, नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल के रक्तकोष विभाग के प्रभारी, चिकित्सा पदाधिकारी अपूर्व रंजन तथा अन्य रक्तदाता भाई-बहनें।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।

तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।

करनाल-हरियाणा। विधायक जगमोहन आनंद को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी।

जगाधरी-हरियाणा। डिप्टी कमिश्नर पार्थ गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अंजु।

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। भारत के नवनिर्वाचित माननीय उप राष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन से स्नेह मुलाकात कर बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। साथ हैं संस्थान के कर्नाटक,मैसूर ज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, ब्र.कु. निकिता तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

मंडी-हि.प्र.। हिमाचल प्रदेश के सचिवालय सभागार में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से नशा निवारण के विशिष्ट कार्य करने पर ब्र.कु. शीला बहन को शॉल ओढ़ाकर व मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्दर सिंह सुक्खु।

नायुनी-खोरधा(ओडिशा)। रक्षाबंधन पर्व पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलू बहन। साथ हैं अन्य भाई-बहनें।

शाहजहांपुर-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में जितिन प्रसाद,वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री,भारत सरकार को माउंट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. चरिता तथा अन्य।

माउंट आबू-पांडव भवन(राज.)। पांडव भवन के परिसर का अवलोकन करने के पश्चात् समूह चित्र में अजमेर सेशन कोर्ट के न्यायाधीश नीरज वर्मा व न्यायाधीश अरिता वर्मा, संस्था की लौकल एडवाइज़र ब्र.कु. बद्री एवं ब्र.कु. शशिकांत।

हाथरस-उ.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर दैनिक हिन्दुस्तान ब्यूरोचीफ और सदस्यों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य।

जयपुर-राजापार्क(राज.)। रक्षाबंधन पर्व पर राजस्थान के माननीय राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ब्लेसिंग कार्ड भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

मुज़फ्फरपुर-बिहार। पंचायती राज विभाग के मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए बिहार एवं झारखंड मध्य जोन प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी।

चाइना-गुआंगज़ो। भारतीय महावाणिज्य दूतावास के सहयोग से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान व पर्ल इको वैली आयुर्वेद रिसॉर्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ चाइना सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सपना, भारत के महावाणिज्यदूत शंभु लिंगप्पा हक्की,गुआंगज़ो, प्रसिद्ध भारतीय संगीतकार जयदेव मुखर्जी तथा अन्य।

समस्तीपुर-बिहार। प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा जिला समाहरणालय सभागार में आयोजित कार्यक्रम में अधिकारियों व कर्मियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. ज्योति,ग्वालियर। मंचासीन हैं अपर जिला समाहर्ता ब्रजेश कुमार, सिविल सर्जन डॉ. संजय कुमार चौधरी, प्रशासक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश,माउंट आबू, ब्र.कु. मधु,गुजरात, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. तरुण तथा अन्य।

नरवाना-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ता एवं पूर्व मंत्री प्रधान एडवोकेट रामेश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा। साथ हैं ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. जसबीर सिंह तथा अन्य।

[illegible]-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर 'डीएवी पब्लिक स्कूल' में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान के पश्चात् समूह चित्र में प्रमाणपत्र के साथ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिंदु तथा अन्य भाई-बहनें।

मानसिक उन्नति क्या है

हम सभी का जीवन हमेशा दो पहलुओं से ओत-प्रोत है। एक तो किसी का आना और दूसरा है किसी का जाना। आने और जाने का सिलसिला निरन्तर चलता है। जब कोई जुड़ता है तो मानसिक शांति हमको ऐसा लगता है कि मिलती है। लेकिन चले जाने के बाद उदासी आती है ऐसा हमको लगता है। आप इन दोनों बातों को बड़े ध्यान से देखेंगे, सोचेंगे तो आपको एक बात समझ में आएगी कि जब ये दोनों चीज़ें हो रही हैं इसके पहले मैं क्या था? पहले का मतलब है जब ये घटना घट रही थी तो उसके पहले हमारी मानसिक अवस्था क्या थी? तो हम पाएंगे कि शुरू में जब कोई नहीं जुड़ा था तो भी हम अकेलापन महसूस कर रहे थे। लेकिन जब कोई जुड़के चला गया तो भी हम अकेलापन महसूस कर रहे हैं।

तो इसका मतलब जो हमारी असली अवस्था है वो एकान्त और अकेलापन है ना! क्योंकि दोनों में कॉमन है- जुड़ा तो, नहीं जुड़ा,चला गया तो। दोनों स्थितियों में हम सभी बिल्कुल सिंगल हैं, अकेले हैं। अब आप देखो इस दुनिया में बीच-बीच में इन सब बातों से हमारा उमंग-उत्साह घट जाता है, प्रेम घट जाता है, भाव घट जाते हैं। क्योंकि इस मानसिक अवस्था को स्वीकार करने के लिए हम राज़ी नहीं हैं। हमें लगता है कि नहीं ये जीवन नहीं हो सकता, कोई तो चाहिए। किसी के साथ तो जीवन निर्वाह करना पड़ेगा,ऐसे थोड़े ही रह सकते हैं!

ऐसे ही दूसरी स्थिति में जब कोई चला जाये तो कहते हैं हमेशा तो कोई साथ होता नहीं। तो हम सब उसी अधूरेपन को दूर करने के लिए अलग-अलग हथकंडे अपनाते हैं। कभी हम किसी चीज़ के साथ जुड़ते हैं, कभी वस्तु, कभी यूट्यूब, कभी फेसबुक कभी जो भी है सिर्फ ये जताने के लिए कि मेरे साथ कोई है, मेरे एकान्त अकेलेपन को कोई दूर कर रहा है। लेकिन ये सही नहीं है कि जो अवस्था बार-बार आ रही है आपके जीवन में, आप दरअसल वही तो हैं। इसलिए मानसिक अवस्था, मानसिक उन्नति का जो सबसे बड़ा आधार है वो ये है कि इस बात को समझ जाना कि जीवन हमारा शुरू से अकेला ही रहा है। लेकिन अकेलापन को, प्यार से जीवन को स्वीकार करना इसकी ताकत हमारे अन्दर बहुत कम है।

परमात्मा निराकार शिव बाबा, शिव पिता हम सबको आकर ये बात रोज़ समझाते हैं कि तुम आत्माएं अकेले आये थे, अकेले जाना है। लेकिन वो बात सहजता से समझ इसलिए नहीं आती क्योंकि हम सबसे पहले ये बात स्वीकार करने को राज़ी नहीं कि सच में हम अकेले ही हैं जीवन में। हमारे आस-पास लोग जुड़ते ज़रूर हैं लेकिन जायेंगे ज़रूर। तो मानसिक उन्नति वहीं से शुरू हो जाएगी जब हम सबसे पहले उस बात को स्वीकार कर लेंगे, मान लेंगे, अपने अन्दर ढाल लेंगे कि हमारे जीवन में सबसे ज़्यादा ज़रूरी है इस बात को मानना कि अकेलापन हमारा कोई दुर्भाग्य नहीं है, हमारा कोई अधूरापन नहीं है। बल्कि ये हमारा सौभाग्य है, हमको ये बात समझ में आ रही है कि किसी के होने या न होने से मैं आत्मा भरपूर नहीं हूँ, ऐसा नहीं होता, मैं आत्मा हूँ ही भरपूर। अकेले थे, अकेले हूँ, अकेले जाना है। इस अवस्था को स्वीकार करने से जीवन में हमारे हर पल, हर क्षण उन्नति होती रहेगी। और हमको लगेगा कि हम कुछ कर रहे हैं, मानसिक रूप से, शारीरिक रूप से, शाब्दिक रूप से, सामाजिक रूप से। क्योंकि अवस्था अगर एक दिन में बदल जाती है तो बहुत कुछ बदल जाता है ना।

इसलिए इस बात को समझ के इसको जीवन में उपयोग करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। इसलिए मानसिक अवस्था को समझना, अकेलेपन को समझना, एकान्त को समझना मानसिक उन्नति ही है।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर हरियाणा योग आयोग एवं बाबा रामदेव के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, सांसद नवीन जिंदल, हरियाणा के पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा, ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. राधा, बाबा रामदेव, आचार्य बालकृष्ण तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण।

दिल्ली-राजौरी गार्डन। सेवाकेन्द्र पर 8-18 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए आयोजित ग्रीष्मकालीन रचनात्मक वर्कशॉप 'विंग्स ऑफ फ्रीडम-2025' में प्रतिभागी बच्चों के साथ ब्र.कु. शक्ति बहन, ब्र.कु. शिल्पा, जे.ल. मेहता तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

हिसार-ज्योतिपुरा(हरियाणा)। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान के पश्चात् समूह चित्र में विधायिका सावित्री जिंदल, ब्र.कु. अनीता तथा अन्य भाई-बहनें। मौके पर उपस्थित रहे हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के नियंत्रक अधिकारी डॉ. पवन कुमार, मेयर प्रवीण पोपली, प्रो. नरसिंह बिश्नोई,कुलपति जीजेयू, एचएयू रजिस्ट्रार पवन कुमार तथा अन्य अतिथिगण।

मथुरा रिफाइनरी नगर-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र व भरतपुरिया चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से ओमशांति भवन,निकट स्वर्ण जयंती हॉस्पिटल में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान करते हुए बीएसएफ के 167वीं बटालियन के जवान, मथुरा रिफाइनरी के कर्मचारीगण। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा तथा अन्य। मौके पर उपस्थित रहे रिफाइनरी के चीफ जनरल मैनेजर एचआर [illegible], जीएम डोंगो बाई, सीआईएसएफ के कमांडेंट नीरज भारती तथा अन्य।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि,विश्व बंधुत्व दिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य अपने प्रमाण पत्र के साथ रक्तदाता ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

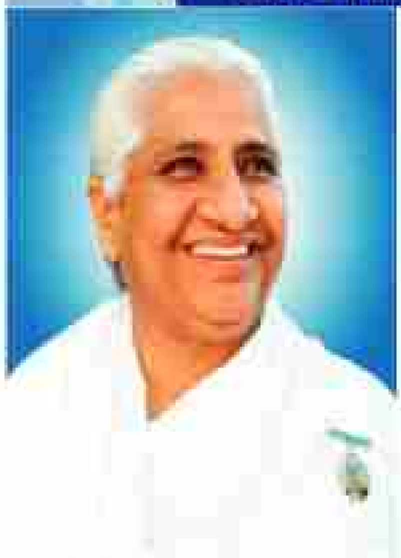

दादी प्रकाशमणि जी की 18वीं पुण्यतिथि

25 अगस्त विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया

आबु रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की18वीं पुण्यतिथि देशभर में विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई। मुख्यालय शान्तिवन में देशभर से पहुंचे पांच हज़ार से अधिक लोगों ने दादी को श्रद्धांजलि अर्पित कर उनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। दादी की स्मृति में बने 'प्रकाश स्तंभ' को विशेष रूप से सजाया गया था। जहाँ सुबह 8 :15 बजे सबसे पहले मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, जगतगुरू शिवर स्वामी करपात्री महाराज,अयोध्या एवं वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दादी को श्रद्धांजली अर्पित की। बता दें कि 25 अगस्त 2007 को दादी प्रकाशमणि जी यह नश्वर देह त्याग कर अव्यक्त हो गई थीं। इसमें मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि दादी ने सभी के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। उनके हमेशा शब्द होते थे कि मैं तो निमित्त मात्र हूं। शिवबाबा ही यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय को चला रहे हैं। दादी ने जीवनभर प्रेम, एकता और भाईचारे का संदेश दिया। दादी हमेशा कहती थीं कि प्रेम और एकता में वह शक्ति है जो बड़े से बड़े कार्य आसान हो जाते हैं। दादी का प्रेम ही था कि लोग सरहदों की दीवारें को भुलाकर एकता के सूत्र में बंधते गए। आपकी शिक्षाएं, योगी-तपस्वी जीवन, विश्व बंधुत्व की सोच आज भी लाखों लोगों का मार्गदर्शन करती है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि दादी का कहना और मेरा करना। मैंने कभी भी दादी को किसी सेवा के लिए ना नहीं कहा।

हमें एक-एक रुपये को सफल करना है

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि दादी सदा सेवाओं में दिन-रात व्यस्त रहती थीं और भाई-बहनों को भी व्यस्त रखती थीं। दादी कहती थीं कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आया एक-एक रुपया दान का है। इसलिए हमें एक-एक रुपये को सफल करना है। अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. करुणा ने कहा कि दादी के सानिध्य में वर्षों तक सेवाएं करने का सौभाग्य मिला। दादी में नम्रता का गुण अद्वितीय था। वह छोटे-बड़े सभी का बहुत ही सम्मान करती थीं।

दादी एक-एक बात को बड़े ही प्यार से सिखाती थीं-

अतिरिक्त महासचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि दादी के साथ मिलकर अनेक सेवाएं कीं। दादी एक-एक बात को बड़े ही प्यार से सिखाती थीं। वह यहाँ आने वाले मेहमानों का बहुत ध्यान रखती थीं। वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. सूरज ने कहा कि दादी की प्यार भरी पालना, अपनापन का कमाल है कि दादी को देखकर हज़ारों कन्याएं, बेटियां ब्रह्माकुमारी बनती गईं। संचालन प्रयागराज की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने किया। ब्र.कु. डॉ. दामिनी एवं मधुरवाणी ग्रुप के ब्र.कु. सतीश व सहयोगी कलाकारों ने गीत प्रस्तुत किया।

ये भी रहे मौजूद- मौके पर अयोध्या के सेवानिवृत्त आई.पी.एस. केबी सिंह, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. शशि दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. लीला दीदी, पंजाब ज़ोन निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी, अतिरिक्त महासचिव डॉ. प्रताप मिड्ढा, मीडिया विंग उपाध्यक्ष ब्र.कु. आत्मप्रकाश, डॉ. सतीश गुप्ता सहित लोग उपस्थित रहे।

भारत में ही दिखता पारिवारिक सम्बन्धों का सुंदर दृश्य: डॉ. वीरेन्द्र सिंह

भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के सचिव अमित यादव ने बताया कि इस अभियान की शुरुआत ब्रह्माकुमारीज संस्था एवं भारत सरकार के साथ हुए मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग(एम.ओ.यू.) के तहत हुई।

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। पारिवारिक सम्बन्धों का जो दृश्य भारत में देखने को मिलता है, वो अन्य किसी भी देश में नहीं है। उक्त विचार केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र सिंह,सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय,भारत सरकार ने व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के समाजसेवा प्रभाग द्वारा ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर में 'संगम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सामाजिक जीवन अभियान' के शुभारम्भ के अवसर पर दादी प्रकाशमणि सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान का भारत सरकार के साथ ये मात्र एक एमओयू नहीं बल्कि सामाजिक मूल्यों एवं संस्कारों की पहचान कराता है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान एक विश्वव्यापी आध्यात्मिक संगठन है। जो इस प्रकार के अभियान को लोगों के बीच बेहतर ढंग से पहुंचा सकता है। ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर की निदेशिका राजयोगिनी

ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि दुनिया में केवल मात-पिता ही ऐसे हैं जो बच्चों की खुशी में खुश होते हैं। उन्हें चाहिए तो सिर्फ बच्चों का स्नेह और समय। उन्होंने सभी से प्रतिज्ञा कराई कि कोई भी अपने बुजुर्गों को वृद्धावस्था आश्रम नहीं भेजेंगे। संस्थान द्वारा अभियान के लिए एक गीत की लॉन्चिंग हुई। जिसे ब्र.कु. चांद ने स्वर प्रदान किए। कार्यक्रम में संस्थान के समाज सेवा प्रभाग अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. प्रेम सिंह, ग्लोबल हॉस्पिटल माउंट आबू के वैज्ञानिक डॉ. रश्मिकांत आचार्य ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. उर्मिल एवं ब्र.कु. सुनैना ने किया।

दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर इंटरनेशनल हाफ मैराथन में दौड़े 2700 धावक

मनमोहिनी वन-आबू रोड(राज.)। 7वीं प्रकाशमणि दादी आबू इंटरनेशनल हाफ मैराथन में रविवार को 7 देशों के 2700 धावकों ने आबू रोड से माउंट आबू के लिए 21.9 किलोमीटर की दौड़ लगाई। मैराथन के नियत समय साढ़े तीन घंटे की अवधि में दो हज़ार धावक फिनिशिंग प्वाइंट तक पहुंचे। वहीं 700 धावक आधी दौड़ ही पूरी कर पाए। ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि 25 अगस्त, विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य में इस मैराथन का आयोजन किया गया था। मैराथन को सुबह 6 बजे मनमोहिनी वन परिसर के गेट नंबर दो से जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी, पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया, रेवदर विधायक मोतीराम कोली और ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा व राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने शिव ध्वजा दिखाकर रवाना किया।

हर 500 मीटर पर तैनात रहे सुरक्षाकर्मी–

मैराथन को लेकर आबू रोड और माउंट आबू पुलिस बल ने पूरी मुस्तैदी के साथ सुरक्षा का जिम्मा संभाल रखा था। जिला प्रशासन के अधिकारी भी पूरे समय अलर्ट मोड पर रहे। लगभग हर 500 मीटर पर सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की गई थी। साथ ही रिफ्रेशमेंट प्वाइंट पर भी पुलिसकर्मी मौजूद रहे। चीफ्वेरी से सुरक्षा का जिम्मा सी.आर.पी.एफ. के जवानों ने संभाल लिया था। यहाँ से माउंट आबू तक सी.आर.पी.एफ. के 28 जवान रनिंग प्वाइंट पर तैनात रहे।

कई देशों से भाग लेने पहुंचे धावक–

मैराथन में सबसे खास बात 18 वर्ष के युवाओं से लेकर 72 वर्ष के बुजुर्गों ने भाग लिया। इसमें भारत के सभी राज्यों सहित खासतौर से साउथ अफ्रीका, ब्रिटेन, केनिया, दुबई, इथोपिया के रनर्स ने भाग लिया। कुछ धावक प्रोफेशनल्स थे तो कुछ शौकिया तौर पर स्वस्थ रहने के लिए दौड़ते हैं। इसमें लड़कियों और महिलाओं ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कुछ रनर्स ने शनिवार को ही आबू रोड से माउंट आबू तक दौड़ लगाकर अभ्यास किया, ताकि मुख्य दौड़ में कम समय में पहुंचकर विजेता बन सकें। ओमशान्ति भवन,माउंट आबू में दौड़ पूरी होने के बाद समापन समारोह आयोजित किया गया। जहाँ विजेताओं को पुरस्कार राशि, मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शुभारम्भ पर इन्होंने रखे अपने विचार–

- जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी ने कहा कि विश्व बंधुत्व का संदेश लेकर आयोजित की गई यह हाफ मैराथन ब्रह्माकुमारीज का सराहनीय कदम है।
- पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया ने कहा कि गर्व की बात है हमारे आबू रोड में हर साल होने वाली हाफ मैराथन में देश-विदेश से धावक भाग लेने पहुंचते हैं।
- रेवदर विधायक मोतीराम कोली ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए योग, प्राणायाम और दौड़ जरूरी है।
- एशियन मैराथन चैंपियन सुनीता गोदरा ने कहा कि दौड़ के लिए उमंग-उत्साह के साथ जुनून होना जरूरी है। बिना जुनून के दौड़ में जीतना सम्भव नहीं है। जो लक्ष्य बनाएं उसे पाने कि लिए जी-जान लगा दें।

इस मौके पर आबू रोड तहसीलदार पन्नालाल चौधरी, सदर थाना सर्किल इंस्पेक्टर दर्शन सिंह, ब्र.कु. जगदीश, ब्र.कु. देव सहित अन्य ब्रह्माकुमारीज भाई-बहनों की उपस्थिति रही। संचालन ब्र.कु. चंदा ने किया। मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने सभी युवाओं को नशामुक्ति का संकल्प कराया।

विजेताओं को दिए गए पुरस्कार राशि के चेक–

को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. सचिन ने बताया कि मैराथन में प्रथम स्थान पर आने वाले विजेता को पुरस्कार के रूप में 71 हज़ार रुपये, द्वितीय विजेता को 61 हज़ार रुपये और तृतीय स्थान पर आने वाले विजेता को 51 हज़ार रुपये की राशि चेक द्वारा पुरस्कार के रूप में दी गई। इसके अलावा निर्धारित समय में दौड़ पूरी करने वाले और सभी धावकों को मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मैराथन में ये रहे विजेता–

प्रथम स्थान पर जोधपुर के 24 वर्षीय युवक देवाराम रहे, जिन्होंने 1 घंटा 19 मिनट 40 सेकंड में दौड़ पूरी की। वहीं द्वितीय स्थान पर गुजरात के अनिल कमाडिया रहे जिन्होंने 1 घंटा 21 मिनट 44 सेकंड में दौड़ पूरी की। तीसरे स्थान पर जैसलमेर के मुकेश कुमार रहे जो 1 घंटा 22 मिनट 17 सेकंड में फिनिशिंग प्वाइंट पर पहुंचे। चौथे स्थान पर पवन समारिया और पांचवें स्थान पर सुनील कुमार कार्वेलिया रहे।

भारत वह देवभूमि, जहाँ देवी-देवताओं का राज था

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय में पहुंचे देशभर से राजा-महाराजाओं के वंशज

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। संस्थान के मनमोहिनी वन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में आयोजित दो दिवसीय रॉयल फैमिली स्पिरिचुअल रिट्रीट का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर किया गया। जिसमें देशभर से राजा-महाराजा घराने के वंशज और रॉयल फैमिली के सदस्यों ने भाग लिया। स्वागत सत्र में रॉयल हैरिटेज, रॉयल फ्यूचर वीडियो प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया गया। इसमें स्वर्णिम युग की झलक दिखाई गई। सभी राजाओं-महाराजाओं का शाही अंदाज में स्वागत किया गया।

उद्घाटन सत्र में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि यह जीवन अमूल्य है। इसे सेवा और परमात्मा की याद में सफल करना है। अपनी वास्तविक पहचान को जानना है कि हम सभी आत्माएं हैं और यह जीवन महान कार्यों, दिव्य कार्यों के लिए मिला है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि जल्द ही भारत स्वर्णिम भारत बनने वाला है क्योंकि भारत ही वह देवभूमि है जहाँ देवी-देवता राज करते थे। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि परमात्मा के घर में आप सभी राजा-महाराजाओं का स्वागत है। यह भगवान का घर, आपका घर है। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का मुख्य उद्देश्य है स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि देशभर के राजघराने के परिवार के सदस्यों को यहाँ देखकर बहुत खुशी हो रही है। आप सभी यहाँ आते रहें। डॉ. प्रताप मिड्‌ढा ने भी सम्बोधित किया।

○ महाराष्ट्र सरकार के कैबिनेट मंत्री व डोंडाइचा के शाही परिवार के जयकुमार रावल ने कहा कि हमारा राजपरिवार और ब्रह्माकुमारीज़ समाज कल्याण, मानव कल्याण के कार्य में लगी हुई है।

○ उदयपुर के महाराजा विश्वराज सिंह बहादुर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ परिवार और हमारे राजघराने का पुराना रिश्ता रहा है। संस्थान का उद्देश्य आध्यात्मिक जागरण और प्रगति है। लोग अध्यात्म से जुड़ें, यही समय की मांग है। यदि अध्यात्म और वैज्ञानिकता एक हो जाए तो दुनिया को बहुत फायदा होगा। मौके पर महारानी महिमा कुमारी भी मौजूद रहीं।

○ सरगुजा-अंबिकापुर,छत्तीसगढ़ के महाराज व छत्तीसगढ़ के पूर्व उपमुख्यमंत्री त्रिभुवनेश्वर शरण सिंह देव ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ परिवार से मैं हृदय से जुड़ा हूं। संस्थान, लोगों में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिकता की शिक्षा देने के लिए सराहनीय कार्य कर रहा है। मौके पर युवराज आदित्येश्वर शरण सिंह देव भी मौजूद रहे।

शाही परिवार के राजा-महाराजा बोले

○ रामपुर,उत्तरप्रदेश के नवाब सैयद मोहम्मद काज़िम अली खान बहादुर ने कहा कि मुझे यहाँ आने का अवसर मिला मैं बहुत खुश हूं।

○ हैदराबाद के आसफ जाही राजवंश के निज़ाम नवाब रौनक यार खान ने कहा कि हैदराबाद में ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रमों में जाने का मौका मिला। संस्थान, सामाजिक बदलाव के लिए अच्छा कार्य कर रही है।

○ महारानी मधुराक्षी सिंह के साथ आये बूंदी के महाराव राजा वंशवर्धन सिंह ने कहा कि मुझे यहाँ आकर आंतरिक शान्ति की अनुभूति होती है।

○ किशनगढ़,राजस्थान की महारानी मीनाक्षी देवी ने कहा कि माउंट आबू अध्यात्म की भूमि है। यहाँ आकर बहुत खुशी हो रही है।

○ सिरोही,राजस्थान के शाही परिवार के महाराजा देवव्रत सिंह बहादुर ने कहा कि महाभारत के इतिहास में वशिष्ठ आश्रम का बड़ा महत्व है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान बहुत ही सराहनीय सेवा कर रही है। मौके पर युवराज डेलेश्वर सिंह भी मौजूद रहे।

○ राजपिपला,गुजरात के युवराज मानवेन्द्र सिंह गोहिल ने कहा कि मैंने यू.एस. में ब्रह्माकुमारीज़ का पीस विलेज सेंटर देखा है। वहाँ जाने से अद्भुत शान्ति की अनुभूति होती है। संस्थान 'विश्व एक परिवार है' का दिव्य संदेश पूरे विश्व में दे रहा है।

इन राजघरानों के राजा-महाराजा भी रहे मौजूद- राजस्थान के मारवाड़ राजघराने के महाराजा गज सिंह,जोधपुर, मारवाड़ राजघराने की महारानी हेमलता राजे, तेलंगाना के जाटप्रोले संस्थानम के राजा साहब आदित्य लक्ष्मण राव, भरतपुर,राजस्थान की महारानी दिव्या सिंह और युवराज अनिरुद्ध सिंह, भरतपुर हेरिटेज होटल व लक्ष्मी विलास पैलेस के निदेशक राव राजा रघुराज सिंह, ओडिशा की परलाखेमुंडी गंगा राजवंश की महारानी कल्याणी गजपति, सिरमौर,हिमाचल प्रदेश की रानी कुंजना सिंह, झालावाड़,राजस्थान के राजा राजेन्द्र सिंह रावावत और कुंवरानी मरुधर कुंवर, ठिकाना बनिया रावावत, मध्यप्रदेश के दतिया के महाराज लोकेन्द्र अरुणादित्य सिंह जू देव बहादुर, गुजरात,दांता के महाराणा साहब रिद्धिराज सिंह, छोटा उदेपुर,गुजरात के महाराजा जयप्रतापसिंह वी. चौहान और महारानी तनवीर चौहान, मध्यप्रदेश,ओरछा के राव राजा विश्वजीत सिंह जू देव और कुंवर पार्थ सिंह जू देव, गुजरात मितली आनंद के शाही परिवार गोहिल बलवीर सिंह, दिलीप सिंह एवं गोहिल कल्पनाबा बलवीर सिंह,कनेटो सानंद, गुजरात के शाही परिवार के जीतेन्द्र सिंह वाघेला और नयनाबा वाघेला, वाघवान के शाही परिवार के कुंवर सुधीर सिंह झाला और कुंवर रानी शक्तिदेवी झाला, गनोद-सौराष्ट्र गुजरात की कुंवर रानी हंसिनीदेवी डी. जाडेजा, जालिम-विलास परिवार जोधपुर की कुंवर रानी मीरा देवी, अभिजीत सिंह राठौड़, दतले पार्वती देवी और दतला वेंकट सत्यनारायण राजू, मोगल्टुरू के जमींदार मुख्य रूप से मौजूद रहे।

उत्कृष्टता के लिए आध्यात्मिकता ज़रूरी: रियर एडमिरल हारा

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर में भारतीय नौसेना रक्षा नागरिकों के लिए आयोजित तीन दिवसीय रिट्रीट में आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय पर भारतीय नौसेना के रियर एडमिरल आदित्य हारा ने कहा कि किसी भी कार्य में उत्कृष्टता के लिए आध्यात्मिकता ज़रूरी है। भारत विभिन्न संस्कृतियों का देश होते हुए भी आध्यात्मिक रूप से एक है। उन्होंने आगे कहा कि आध्यात्मिकता केवल व्यक्तिगत जीवन में ही नहीं बल्कि देश की सुख-समृद्धि के लिए भी ज़रूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान आध्यात्मिक मूल्यों के आधार से विश्व में शान्ति एवं प्रेम का संचार कर रहा है। नौसेना रक्षा नागरिकों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि वे जो कुछ भी यहाँ सीखें उसे जीवन में ज़रूर अपनाएं। संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि जीवन में असली खेल हमारे विचारों का है, शारीरिक स्वास्थ्य से भी ज़रूरी मानसिक स्वास्थ्य है। हमारा व्यक्तिगत जीवन जितना अच्छा होगा उतने ही अच्छे ढंग से हम देश व समाज की सेवा कर सकते हैं। बाहरी परिस्थितियों का सामना करने के लिए आंतरिक शक्ति ज़रूरी है। जो आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही सम्भव है। संस्थान के सुरक्षा सेवा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान ही सच्चा मार्गदर्शक है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही मन स्वस्थ एवं खुशहाल रहता है। भारतीय नौसेना के कैप्टन शिव कुमार ने संस्थान के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन सेना के सेवानिवृत्त कर्नल बीसी सती ने किया। कार्यक्रम में 120 से भी अधिक भारतीय नौसेना रक्षा नागरिकों ने शिरकत की और रिट्रीट का लाभ लिया।

भारतीय नौसेना रक्षा नागरिकों के लिए तीन दिवसीय आध्यात्मिक सशक्तिकरण रिट्रीट का आयोजन

रक्तदान करना सर्वश्रेष्ठ पुनित कार्य है: सांसद शंकर लालवानी

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। दादी प्रकाशमणि जी भले आज शरीर रूप में हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी प्रेरणा हमारे साथ है। दादी ने आजीवन विश्व भर में समाज की सेवा की और आज उनके पुण्य स्मृति पर यह पुनीत कार्य किया जा रहा है, यह बहुत ही सराहनीय है। उक्त विचार सांसद शंकर लालवानी ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग द्वारा न्यू पलासिया स्थित ज्ञानशिखर में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर के उद्घाटन में रखे। इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने बताया कि पूरे भारत और नेपाल में 22 से 25 अगस्त तक विशाल रक्तदान महाअभियान चलाया जा रहा है जिसमें 1 लाख यूनिट रक्त एकत्रित कर विश्व रिकॉर्ड बनाने का लक्ष्य रखा गया है। संपूर्ण डायग्नोस्टिक सेंटर की डायरेक्टर डॉ. साधना सोडाणी ने कहा कि अगर रक्त देने के काबिल हो तो जीते ही रक्तदान और मरने के बाद नेत्रदान अवश्य करें। एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज के ट्रांसफ्यूज़न मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र वर्मा ने कहा कि रक्तदान करते रहना चाहिए। एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अरविंद घनघोरिया, एम.वाय. हॉस्पिटल व सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ. अशोक यादव, कस्टम विभाग के अपरायुक्त डॉ. दिनेश बिसेन, समाजसेवी गिरीश लुल्ला, एम.वाय. हॉस्पिटल के ब्लड बैंक के विभागाध्यक्ष डॉ. रानू ठाकुर, डॉ. नितिन अजमेरा आदि ने भी रक्तदान का महत्व बताते हुए अपनी शुभकामनाएं दी।

भ्रांतियों को खत्म कर हमें रक्तदान करना चाहिए

बिलासपुर छ.ग.। राजयोगिनी ब्र.कु. प्रकाशमणि दादी की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान एवं निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का शुभारम्भ सभी अतिथियों के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। एस.ई.सी.एल. के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक हरीश दुहन ने कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूं कि दादी की पालना का अनुभव आज भी महसूस होता है। उनका स्मृति दिवस- विश्व बंधुत्व दिवस पर आयोजित रक्तदान महाअभियान में सभी को बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। विधायक सुशांत शुक्ला,बेलतरा ने कहा कि रक्तदान महाअभियान के द्वारा मानव शरीर के लिए रक्त बीज की व्यवस्था सबसे बड़ा सामाजिक सरोकार है। महापौर पूजा विधानी ने कहा कि रक्तदान के बारे में भ्रांतियों को खत्म कर हमें रक्तदान करना चाहिए। सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. मंजू ने कहा कि आत्मा और रक्त में कोई जाति, धर्म का भेद नहीं होता। उन्होंने आगे बताया कि शिविर में कुल 162 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

RNI NO. RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 23th TO 24th Each Month
स्वामी - आर.ई.आर.एफ. प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- [illegible] द्वारा [illegible], 1-101-2, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) में मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़ शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, तलहटी, आबू रोड, शान्तिवन - (राज.) - 307510
See Latest News login
www.omshantimedia.org